www.thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६४ | अंक ६ | फरवरी २०१६ | माघ २०७३ | वार्षिक मूल्य १५० रु०

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जिन्होंने शिवरात्रि पर बोध पाकर
समस्त मानवजाति को प्रबुद्ध कर दिया।

वीर क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद

27 फरवरी 1927 को शहीद
जो कृतघ्न साथियों के षड्यन्त्र का शिकार
होने पर भी जीवित रहते हुए अंग्रेजों की
पकड़ में नहीं आये।

अद्भुत क्रान्तिकारी वीर विनायक दामोदर सावरकर

26 फरवरी 1966 को निधन
देश को स्वतन्त्र कराने में सबसे अधिक यातना सहन करनेवाले क्रान्तिकारी वीर।
भारत सरकार ने इन्हें स्वतन्त्र भारत में भी शान्ति से नहीं रहने दिया।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

www.thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष :६४ अंक : ६
फरवरी २०१७ विक्रमाब्द २०७३
दयानन्दाब्द १९३ कलिसंवत् ५११७
सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११७

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	आर्याभिविनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	क्रान्तिकारी बालक मूलशंकर	3
4.	एक प्रतिशोध चन्द्रशेखर आजाद के....	9
5.	वीर विनायक दामोदर सावरकर	12
6.	ऊँची जातियों का आरक्षण	21
7.	समाचार प्रभाग	23

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

www.thearyasamaj.org

आर्याभिविनयः

प्रार्थना-विषय

दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे,
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।। ३।।

३६।१८।।

व्याख्यान— हे अनन्तबल महावीर ईश्वर! (**दृते**) हे दुष्टस्वभावनाशक! विदीर्णकर्म अर्थात् विज्ञानादि शुभ गुणों का नाशकर्म करनेवाला मुझको मत रक्खो = स्थिर मत करो, किन्तु उससे मेरे आत्मादि को उठाके विद्या सत्यधर्मादि शुभ गुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थिर करो। (**दृꣳह मा**) हे परमैश्वर्यवन् भगवन्! धर्मार्थकाममोक्षादि तथा विद्या विज्ञानादि दान से अत्यन्त मुझको बढ़ा। (**मित्रस्येत्यादि०**) हे सर्वसुहृदीश्वर सर्वान्तर्य्यामिन्! सब भूत प्राणिमात्र मित्र की दृष्टि से यथावत् मुझको देखें। सब मेरे मित्र ही हो जायें। कोई मुझसे किञ्चिन्मात्र भी वैरदृष्टि न करे। (**मित्रस्याहं चेत्यादि**) हे परमात्मन्! आपकी कृपा से मैं भी निर्वैर होके सब भूत प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से स्व-आत्म= स्व-प्राणवत् प्रिय जानूं। अर्थात् (**मित्रस्य चक्षुषेत्यादि**) पक्षपात छोड़के सब जीव देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर वर्तमान करें। अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्तें। यह परम धर्म का सब मनुष्यों के लिए परमात्मा ने उपदेश किया है। सबको यही मान्य होने योग्य है ॥ ३॥

स्तुति-विषय

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापतिः॥ ४॥

३२।१॥

व्याख्यान : जो सब जगत् का कारण एक परमेश्वर है, [(**तदेवाग्निः**)] उसी का नाम 'अग्नि' है, "**ब्रह्म ह्यग्निः**" शतपथे। सर्वोत्तम ज्ञानस्वरूप और जानने के योग्य, प्रापणीयस्वरूप और पूज्यतमेत्यादि 'अग्नि' शब्द के अर्थ हैं। "**आदित्यो वै ब्रह्म**", **वायुर्वै ब्रह्म, चन्द्रमा वै ब्रह्म, शुक्रं हि ब्रह्म, सर्वजगत्कर्तृ ब्रह्म, ब्रह्म वै बृहत्, आपो वै ब्रह्म** इत्यादि शतपथ तथा ऐतरेय ब्राह्मण के प्रमाण हैं। (**तदादित्यः**) जिसका कभी नाश न हो, और स्वप्रकाशस्वरूप हो, इससे परमात्मा का नाम 'आदित्य' है। (**तद्वायुः**) सब जगत् का धारण करनेवाला, अनन्त बलवान्, प्राणों से भी जो प्रियस्वरूप है, इससे ईश्वर का नाम 'वायु' है। पूर्वोक्त प्रमाण से (**तदु चन्द्रमाः**) जो आनन्दस्वरूप और स्वसेवकों को परमानन्द देनेवाला है, इससे पूर्वोक्त प्रकार से 'चन्द्रमा' परमात्मा को जानना। (**तदेव शुक्रम्**) वही चेतनस्वरूप ब्रह्म सब जगत् का कर्त्ता है। (**तद् ब्रह्म**) सो अनन्त चेतन सबसे बड़ा है, और धर्मात्मा स्वभक्तों को अत्यन्त सुख विद्यादि सद्गुणों से बढ़ानेवाला है। (**ता आपः**) उसी को सर्वत्र चेतन सर्वत्र व्याप्त होने से 'आपः' नामक जानना। (**स प्रजापतिः**) सो ही सब जगत् का पति=स्वामी और पालन करनेवाला है, अन्य कोई नहीं। उसी को हम लोग इष्टदेव तथा पालक मानें, अन्य को नहीं॥ ४॥ *(क्रमशः)*

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय .....

हमें बोध कब होगा?

बालक मूलशंकर को शिवरात्रि पर बोध हुआ तो उस बोध के पश्चात् सत्य का अन्वेषण करते-करते शुद्धचैतन्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती बनते हुए महर्षि पद को प्राप्त होगये और अपने समय में वर्तमान लोगों को सच्चे शिव का बोध कराते-कराते परम पद को प्राप्त कर गये तथा भावी पीढ़ी को सत्य का बोध कराने के लिए सत्यार्थप्रकाश जैसे अनेक अमूल्य ग्रंथ प्रदान कर गये। इन ग्रंथों से ज्ञान प्राप्त करके आर्यसमाज के दर्जनों महापुरुषों ने अपने जीवन परोपकार में लगाकर लाखों लोगों को सन्मार्ग पर लगाया।

ब्रह्मर्षि दयानन्द जी ने वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि ग्रन्थों का सत्य अर्थ करके हमारे लिए सुख-शान्ति सहित जीवनयापन करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। परन्तु हम आर्य कहलाने वाले मनुष्य वेदादि ग्रंथों को पढ़ते-पढ़ाते हुए भी उनमें वर्णित शिक्षा को जीवन में क्रियात्मक रूप से नहीं उतार पा रहे। फलस्वरूप आर्य कहाने वाले लोग, उनकी संस्थायें, सभायें, विद्यालय आदि परस्पर प्रेमपूर्वक व्यवहार न करके ईर्ष्या, राग-द्वेष, कलह, के वशीभूत होकर, कर्म न करके पद प्राप्ति और झूठी मानप्रतिष्ठा हेतु संघर्षमय जीवन बिताने में समय और धन का दुरुपयोग कर रहे हैं। क्या इसीलिए ऋषि जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी और क्या इसीलिए हमसे पूर्वोत्पन्न संन्यासी, महात्मा, विद्वानों ने अपना सर्वस्व समर्पित करके हमें सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी थी।

दुःख होता है यह देख और जानकर कि भारत और भारत से बाहर भी आर्यसमाजों, प्रतिनिधि सभाओं आदि में फूट, कलह वैमनस्य आदि के कारण अनेक समाज और सभायें बनी हुई हैं और वे सभी स्वयं को वेदानुकूल, ऋषि दयानन्द के भक्त और शुद्ध आर्य मानते हैं। यदि सभी ऐसा कहते और करते हैं तो यह पृथक्ता क्यों है? किसी न किसी पक्ष में तो सच्चाई का अभाव अवश्य मिलेगा अथवा मानप्रतिष्ठा प्राप्ति की होड़ में दूसरे को सहन करने का, त्यागभाव से रहने का सामर्थ्य नहीं है।

हमारी इसी न्यूनता के कारण अन्य सम्प्रदाय और मतावलम्बी लोग जनता को पाखण्ड और असत्यमत में झुकाने में सफल होते जा रहे हैं। साहित्य प्रकाशन, दूरदर्शन पर सीरियल द्वारा तथा शिविरों के माध्यम से अपने मन्तव्यों का पूरा प्रचार कर रहे हैं।

स्वयं को असली आर्य मानने वाले कुछ लोग ऐसे भी हैं जो सत्यार्थप्रकाश की आड़ लेकर ही प्रकाशकों और सम्पादकों से कलह करने में गौरव अनुभव करते हैं, वे किसी अन्य की बात तक सुनने को तैयार नहीं होते। गत दिनों दिल्ली के प्रगतिमैदान में आयोजित विश्वपुस्तक मेले में भी इस प्रकार के व्यक्ति सत्यार्थप्रकाश के शब्दों को लेकर वितरकों से लड़ते-झगड़ते और उन्हें पापी तक कहते हुए सुने गये। ऐसे दुराग्रही और हठी व्यक्ति भी स्वयं को आर्य कहते हैं, यह आश्चर्य है। कुछ महानुभाव इसी बात को अधिक तूल देकर न्यायालयों में भी चले गये हैं कि अमुक संस्था सत्यार्थप्रकाश न छापे, न बेचे। वे समझते हैं कि न्यायाधीश पूरे वैदिक सिद्धान्तों के और सत्यार्थप्रकाश के मर्मज्ञ हैं, वे सच्चा न्याय करेंगे। भला न्यायाधीशों

www.thearyasamaj.org

को इन धार्मिक ग्रंथों के विषय में इतना गहरा ज्ञान प्राप्त करने का अवसर कब मिलता है, जो इस विषय में सही निर्णय दे पायेंगे।

वे सब समस्यायें अपने कर्त्तव्य का बोध न होने के कारण उत्पन्न की हुई हैं। यदि इस प्रकार के लोग स्वार्थ त्यागकर ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए अन्य पन्थों की भांति जनता में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करें तो उनके साथ-साथ जनता का भी कल्याण हो सकता है।

प्रतिवर्ष शिवरात्रि पर हम ऋषि दयानन्द जी की स्मृति में बोधोत्सव मनाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं। उस कार्यक्रम की सचित्र सूचना पत्रिकाओं में प्रकाशित कराकर अपने अहं की तुष्टि कर लेते हैं। कभी यह भी सोचा है कि इस प्रकार के आयोजनों से कितने नये व्यक्ति आर्यसमाज की शरण में आये हैं अथवा दो-चार उपदेशकों, राजनेताओं के भाषण तथा भजनोपदेशकों के भजन करवाकर ही उत्सव की सफलता मान बैठते हैं।

ईसाई पादरी और मुस्लिम मौलवी आदि लोगों के घर-घर जाकर अपना साहित्य भेंट करके, अपने सम्प्रदाय का आडम्बरपूर्ण गुणगान करके हमारे भोले लोगों को पथभ्रष्ट कर रहे हैं किन्तु हम परस्पर कलह करने में और धन को न्यायालयों में, व्यर्थ व्यय करने में ही लगे रहते हैं।

इस शिवरात्रि के बोधोत्सव पर हमें अपने कर्त्तव्य का बोध होना चाहिए। तभी बोधोत्सव मनाना सफल हो सकेगा अन्यथा चार-पांच घण्टे भाषणबाजी करके अगले बोधोत्सव तक चुप्पी साधे बैठे रहेंगे। यह दिवस ऋषि जी के आदेश को क्रियान्वित करने का है न कि केवलमात्र स्मरण करने का

शिवरात्रि पर विशेष लेख —

क्रान्तिकारी बालक मूलशङ्कर

ऋषि दयानन्द्र प्राचीन और अर्वाचीन के बीच के इस देश के सबसे महान् राष्ट्रनिर्माता हैं। यदि दयानन्द न हुए होते, तो हम बहककर कहाँ से कहाँ जा पहुँचते, इसकी कल्पना करके हृदय थरथरा जाता है।

यह एक उल्लेखनीय बाता है कि पिछले सौ साल की अल्प अवधि ही में, इस पुण्यभूमि भारत के एक प्रान्त ने ऐसी अन्यतम विभूति भेंट हमें दी, जिसका नाम मानव-जाति का हृदयमन्थन करनेवाले असाधारण मनीषियों की तालिका में युग-युग तक अमर बना रहेगा। बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि महर्षि दयानन्द ऋषिप्रसविनी गुर्जरभूमि के एक छोटे से गाँव की उपज थे। दयानन्द का बचपन का नाम था मूलशंकर। उनका जन्म संवत् 1881 वि० (अर्थात् 1824 ई०) में काठियावाड़ (सौराष्ट्र) के मौरवी राज्य के टङ्कारा नामक गाँव में एक उच्चकोटि के ब्राह्मण-परिवार में हुआ था। उनके पिता अम्बाशङ्कर एक कट्टर वेदपाठी, सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण और मोरवी राज्य के अति सम्माननीय पदाधिकारी थे। स्वयं दयानन्द ही का कथन था कि उनकी अपनी शिक्षा पाँच वर्ष की आयु ही में आरम्भ हो चुकी थी। तब आठवें वर्ष में प्रवेश करने पर उपनयन-संस्कार के बाद तो वह विधिवत् वेदाध्ययन में संलग्न हो गए थे।

जब मूलशङ्कर चौदह वर्ष के हुए, तो उनके जीवन में एक ऐसी घटना घटी, जिसने उन्हें सदैव के लिए एक दिशा विशेष की ओर मोड़ दिया और उन्हें धर्म और समाज के क्षेत्र में प्रचलित अन्धभावनाओं का कट्टर विरोधी साथ ही सच्चा

www.thearyasamaj.org

सत्यान्वेषक बना दिया। बात यह हुई कि प्रति वर्ष की भाँति, जब उस साल भी महाशिवरात्रि का महान् पर्व-दिवस आया, तो पिता अम्बाशङ्कर ने (जो एक कट्टर शिवभक्त और पक्के रूढ़िवादी ब्राह्मण थे) अपने पुत्र को व्रत रखकर सारी रात जागरण में बिताने तथा उपवास करने के लिए विवश किया। वह उसे अपने साथ लेकर पूजा-पाठ के निमित्त अन्य उपासकों सहित गाँव के बाहर एक शिवालय में जा बैठे। आधी रात के लगभग उस उपासक मण्डली के अन्य लोग तो क्रमश: नींद के झोंकों के आगे लड़खड़ाकर एक के बाद एक लोट-पोट हो गए — परन्तु जागता रहा अपने सङ्कल्प का धनी, सच्चा धर्मव्रती, वह चौदहवर्षीय किशोर मूलशङ्कर। मन्दिर के चारों ओर अन्धकार और सन्नाटा छाया हुआ था। केवल शिवमूर्ति के समीप एक घी का दीपक टिमटिमाते हुए थोड़ा-बहुत उजाला किए हुए था। इतने में कुछ ही समय बाद, यह व्रती बालक देखता क्या है कि एक छोटी-सी चुहिया नैवेद्य की तलाश में आकर, उस शिवमूर्त्ति पर उछल-कूद मचा रही है। बालक मूलशङ्कर के मन में इस दृश्य को देखकर विचारों का एक तूफान-सा उठ खड़ा हुआ। उससे चुप न रहा गया और तत्काल ही पिता को जगाकर, अपने संशय का समाधान करने के लिए, उनसे अनेक प्रश्न इस सम्बन्ध में उसने पूछ डाले। पिता के टकसाली उत्तर उसे सन्तुष्ट न कर पाए। अत: उसी समय वह देवालय से उठकर अपने घर पर चला आया और शिवरात्रि का अपना वह व्रत उसने तोड़ डाला।

जीवन का नया मोड़

पिता ने डाँट-फटकारकर, उसे राह पर लाने का भरसक प्रयास किया। किन्तु इसका उस पर कोई अनुकूल प्रभाव पड़ते न दिखाई दिया। उल्टे, अब वह उनकी ओर से और भी अधिक खिंचा-खिंचा-सा रहने लगा। अब उसका एकमात्र विश्वासभाजन और सच्चा पृष्ठपोषक यदि कोई था, तो वह उसके एक चाचा थे। वह काफी उदार वृत्ति के व्यक्ति थे। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ ही वर्ष बाद महामारी के प्रकोप से उनका असमय ही देहान्त हो गया। इस घटना का मूलशङ्कर के भावुक हृदय पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। इसके दो वर्ष पूर्व अपनी एक प्यारी बहन को भी इसी तरह कालकवलित होते देखकर, इस नवयुवक का मन दु:खमूलक संसार की ओर से एकदम उदासीन हो गया था। तब से ही वास्तविक सुख के किसी सुदृढ़ आधार की निरन्तर खोज करता हुआ वह इस जरामृत्युग्रस्त संसृति के बन्धनों से छुटकारा पाने की औषधि जानने के लिए विकल हो रहा था। उसकी इस असामयिक विरक्ति से घबराकर अन्त में उसके माता-पिता ने वही उपाय सोचा, जो ऐसी स्थिति में आमतौर से प्रयोग में लाया जाता है। उन्होंने तुरन्त ही उसका विवाह कर देने का निश्चय किया, ताकि गृहस्थी के मोहजाल में फँसकर इस वैराग्य भाव को वह तिजलाञ्जलि दे दे तथा सामान्य रास्ते पर आ जाए।

गृहत्याग और गुरु की खोज

परन्तु जो व्यक्ति आग से जले की दवा खोजने जा रहा था, वह भला स्वयं आग में क्यों कूदने लगा। मूलशङ्कर ने विवाह की बेड़ियों को सामने आते देखकर, चतुराई से टालमटूल की नीति से काम लेने का भरसक प्रयत्न किया। उसने वर्षभर के लिए विवाह को आगे स्थगित रखने की अवधि पिता से माँगी। तदनन्तर, जब वह अवधि भी समाप्त हो गई, तो विशेष शिक्षा के लिए काशी जाने की चाह उसने प्रकट की। पिता ने उसे काशी तो नहीं

www.thearyasamaj.org

जाने दिया, पहर पड़ौस ही के एक गाँव के एक नामवर पण्डित के पास उसे पढ़ाई के लिए भेजने को वह राजी हो गए। परन्तु जब उस शिक्षक से भी उन्हें यही सूचना मिली कि यह युवक किसी भी दशा में अपना विवाह करने को राजी नहीं है, बल्कि शीघ्र ही किसी युक्ति से घर से निकल भागने ही के फेर में है, तब तो पिता ने शीघ्रता करने ही में अपनी भलाई समझी। तुरन्त ही ब्याह के बाजे-गाजे बजने लगे। लेकिन यह दृढ़सङ्कल्पी युवक भी अपने निश्चय पर मानो तुला बैठा था। वह लग्न-तिथि के एक सप्ताह पूर्व ही चुपके से एक दिन घर से भाग निकला। उसने गेरुआ धारण कर लिया और साधुवेष में उपयुक्त गुरु की तलाश में यहाँ से वहाँ भटकना शुरू किया। कहते हैं, पिता ने टोह पाकर सिद्धपुर नामक स्थान में फिर से उसे जा पकड़ा और एक कोठरी में बन्द करके उन्होंने उस पर कड़ा पहरा बिठा दिया। पर न जाने किस तरह, यह विद्रोही पहरेदारों को चकमा देकर, उसी रात को फिर से अपनी राह पर चलता बना और शुद्ध चैतन्य नाम धारण करके। नर्मदातट पर चाणोद-कल्याणी नामक स्थान में परमहंस परमानन्द के आश्रम में पहुँचकर, कई दिनों तक वह वेदान्त का अध्ययन करता रहा और वहीं दण्डी स्वामी पूर्णानन्द के हाथों विधिवत् संन्यास ग्रहण कर, वह सदा के लिए संसार-जाल से मुक्त हो गया। अब वह "स्वामी दयानन्द सरस्वती" बन गया था।

देशभ्रमण और विरजानन्द से भेंट

इस प्रकार चौबीस वर्ष की आयु ही में, ब्रह्मचारी मूलशङ्कर आश्रम-व्यवस्था की गृहस्थ जीवन की बीच की सीढ़ी लाँघकर संन्यासी दयानन्द के रूप में परिणत हो गया। इसके बाद तो जिस प्रकार बरसों अपने परम ध्येय की खोज में यहाँ से वहाँ भटकते हुए, वह नर्मदा से ठेठ गङ्गा और विन्ध्यमेखला से हिमालय तक इस देश की खाक छानता रहा, वह है इतिहास की यवनिका की ओट में छिपी हुई एक अज्ञात कहानी। कहते हैं, इस बीच उसने कुछ समय तक योगानन्द, ज्वालानन्द और शिवानन्द पुरी नामक योगविद्या के आचार्यों से योग का पाठ सीखा। तदनन्तर, कृष्णशास्त्री नामक एक पण्डित से व्याकरण और दर्शन के गहन तत्त्वों का अध्ययन किया। फिर कुछ दिनों तक, उसने अरावली की पर्वतश्रेणी में आबू के गिरि-शिखर पर भी आसन जा जमाया। इसके अनन्तर, काफी समय तक हिमालय की दुर्गम चट्टानों से लोहा लेते हुए वह कठोर तप में भी लीन रहा। किन्तु इस पर भी जब उसे उपयुक्त प्रकाश नहीं मिला, तो निराश हो वह पुनः मैदानों में उतर आया। तभी हरिद्वार, कानपुर, प्रयाग आदि स्थानों का चक्कर काटता हुआ वह पण्डितों के पुरातन गढ़ काशी पहुँचा। पर वहाँ भी उसकी उत्कट जिज्ञासा और मुक्ति की प्यास को कोई न बुझा सका।

सच तो यह था कि अब तक उसे अपने मन के उपयुक्त कोई गुरु मिला ही नहीं था। उसके जैसे असामान्य सत्यशोधक के लिए तो उसी जैसे असाधारण पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता थी। आखिरकार, घूमते-भटकते वह काशी से मथुरा आया और वहाँ एक कङ्कालवत् वृद्ध अन्ध संन्यासी के चरणों में उसने अपने-आपको डाल दिया। उसे अपनी अब तक की सारी छानबीन के बाद, केवल यही एक व्यक्ति ऐसा मिला था, जो सचमुच ही उसे ठीक राह बता सकता था। इस प्रज्ञाचक्षु दण्डी संन्यासी विरजानन्द सरस्वती के रूप में उसे जब यथार्थतः अपने अनुरूप गुरु और पथ-प्रदर्शक मिल गया, तो उसकी ही ऊँगली पकड़कर, अन्त में उस

www.thearyasamaj.org

कल्याण-मार्ग का सफल पथिक वह बन सका, जिसके लिए घर-द्वार, स्वजन आदि सभी को ठुकराकर, चुपके से एक दिन वह घर से भाग निकला था।

गुरु-शिष्य की अनोखी जोड़ी

प्रज्ञाचक्षु दण्डी साधु विरजानन्द अपने युग का एक अत्यन्त विकट, विलक्षण और असाधारण महापुरुष था। उसका अपना जीवन भी दयानन्द की अब तक की जीवनलीला से किसी अंश में कम रोमाञ्चक नहीं था। बचपन ही में वह अपने माँ-बाप के साथ-साथ, आँखों की ज्योति भी खोकर, एक निस्सहाय अनाथ व्यक्ति बन गया था। परन्तु उस असहायावस्था में भी उसने अपनी दुर्द्धर्ष सङ्कल्प-शक्ति, असामान्य बुद्धि और अदम्य साहस के बल पर, क्रमश: संस्कृत-व्याकरण जैसे दुरूह विषय पर प्रभुत्व प्राप्त कर, वेदों के विषय में एक पाण्डितत्यपूर्ण नवीन दृष्टिकोण प्रस्थापित किया था। वह वेदों की मौलिक शिक्षा ही को महत्त्व देता था और मानता था। बाद की विविध सम्प्रदायमूलक उनकी व्याख्याओं को नहीं। इसी तरह पुराणों का वह घोर विरोधी था, और उनके द्वारा पोषित बहुदेवोपासना, मूर्त्ति-पूजा आदि बातों को खुलकर बाद की वेद-विरुद्ध एवं अधार्मिक विकृति घोषित कर रोष प्रकट करता था। वह एक ऐसे साहसी शिष्य की खोज में था, जो उसका सन्देश सुनाकर दिन पर दिन बढ़ते जा रहे पाखण्ड का डेरा-तम्बू उखाड़ फेंके और इस भारतभूमि में फिर से वेदों की पताका फहरा दे। अन्तत: जब विधाता ने उसे अनायास ही युवक दयानन्द के रूप में वह मनचाहा शिष्य उसके चरणों में ला खड़ा किया, तो वृद्धावस्था के कारण जर्जर हो जाने पर भी, इस अन्धे साधु ने जी-जान से अपने विशेष दृष्टिकोण के अनुसार, उसे संस्कृत व्याकरण से लेकर, वेदों तक की महती शिक्षा देना शुरू किया।

तब शिक्षाकाल की समाप्ति पर गुरुदक्षिणा चुकाने का प्रश्न का खड़ा हुआ और दयानन्द केवल आधा सेर लौंग लेकर विरजानन्द से अन्तिम विदा माँगने पहुँचे। उस समय का दृश्य अत्यन्त कारुणिक साथ ही अति महान् था। गुरु अपने इस महामेधावी शिष्य को इतने सस्ते दामों छूट जाने देने को तैयार नहीं थे। अतएव अपनी वास्तविक गुरुदक्षिणा के रूप में, दयानन्द पर इस कठोर प्रतिज्ञा का बोझ उन्होंने लाद दिया कि वह इस देश में पुन: विशुद्ध वैदिक धर्म को प्रतिष्ठापित कर किंकर्त्तव्यविमूढ़ आर्यजाति को अपने पैरों पर खड़ा करने तथा संसार में वैदिक ज्ञाननिधि का प्रचार करने के हेतु अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दे।

शिष्य ने इस कठिन गुरुदक्षिणा को चुकाने में सौलहों आने अपना वचन निभाया। उन्होंने गुरु से विदा लेने के कुछ ही वर्ष बाद, सन् 1867 ई० में हरिद्वार के महाकुम्भ के अवसर पर अपनी प्रख्यात 'पाखण्डमर्दन पताका' फहराकर, जिस दिन कुसंस्कारग्रस्त आर्यजाति को पहले-पहल पुनरुत्थान का अपना मन्त्र सुनाया था, उस दिन से मृत्युपर्यन्त उनके जीवन का एक-एक क्षण उसी महाप्रतिज्ञा की पूर्ति के प्रयास में ही बीता। अपने इस महासङ्कल्प को पूरा करने के लिए कितनी लड़ाइयाँ उन्होंने न लड़ी और क्या आपत्तियाँ नहीं उठाई ?

रचनात्मक सुधारों की ओर भी खुलकर हाथ बढ़ाया। वस्तुत: भारतीय-समय को एक ही सूत्र में संघटित करने के महान् अनुष्ठान का उद्‌गाता यह प्रखर संन्यासी ऐसा अजेय और निर्भीक था कि विरोधियों के लाख हाथ-पैर पटकने पर भी, उसका दुर्द्धर्ष तेज किसी के दबाए न दबाया जा सका।

उसने इस देश के धर्म-आँगन में एक व्यापक क्रान्ति का सूत्रपात कर दिया। फलत: कालान्तर में हमारे जीवन के अन्य अङ्गों को भी हिलाने में परोक्ष अथवा अपरोक्षभाव से अमूल्य सहायता दी। निश्चय ही राममोहनराय, रामकृष्ण परमहंस, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशवचन्द्र सेन और रामतीर्थ जैसे धर्मनेताओं द्वारा प्रज्वलित चिनगारियों की तरह इस संन्यासी दयानन्द ने भी एक प्रखर क्रान्ति की लपट को जन्म दिया था, जिसने आधुनिक भारत के कलेवर में फिर से विद्युत्चेतना का सञ्चार कर दिया था। उस विद्युद्वल्लरी ने ही अन्तत: तिलक आदि स्वतन्त्रता-सेनानियों को ऊर्जित करके विदेशी शासन से मातृभूमि को मुक्ति दिलाई।

पूर्ववर्ती राममोहनराय आदि की तरह ऋषि दयानन्द ने भी सार्वजनिक क्षेत्र में आते ही अपने देश की प्राचीन ज्ञान-निधि की ओर जनसाधारण का ध्यान खींचने और उसका यथार्थ तत्त्व संसार को समझाने का महत्त्व और मूल्य परखा था। जहाँ विविध धर्मों की बुराइयों से किनारा करने का उपदेश वह देते थे, वहाँ साथ ही साथ उनकी अच्छाइयों को अपनाने के लिए जी खोलकर प्रोत्साहन देने में भी किसी से पीछे नहीं हटते। यह बात ''सत्यार्थ प्रकाश'' के अन्त में लिखित उनके निम्न वाक्यों से स्पष्ट हो जाती है - ''मेरा कोई नवीन कल्पना या मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है, उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना-छुड़वाना ही मुझको अभीष्ट है।'' इन शब्दों से हमें उनके उदार दृष्टिकोण का प्रमाण मिल जाता है।

'आर्यसमाज' की स्थापना

सन् 1872 ई० के दिसम्बर मास में, स्वामी जी घूमते-फिरते भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म के क्षेत्र के अपने युग के अन्य तीन प्रमुख भारतीय महापुरुषों— रामकृष्ण परमहंस, देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन — से भेंट की। केशवचन्द्र के नेतृत्व में 'ब्राह्मसमाज' ने उनका हृदय से स्वागत किया और अपने कार्य में सहयोग की आशा से उनकी ओर भ्रातृत्व का हाथ भी बढ़ाया। किन्तु दयानन्द के लिए उनके साथ पटना बहुत कठिन था। कारण, वह पाश्चात्यीकरण के घोर विरोधी थे और केवल वेदों की भित्ति पर प्रस्थापित विशुद्ध आर्यधर्म ही के प्रबल उपासक थे, जबकि केशव के नेतृत्व में ''ब्राह्मसमाज'' अधिकाधिक ईसाइयत और पश्चात्य विचारों की ओर की झुकता चला जा रहा था।

इस पश्चिमी संस्कृति और ईसाई मत की ओर दिन पर दिन बढ़ते चले जा रहे कुछ शिक्षित लोगों के खतरनाक झुकाव को राष्ट्रीय हित की दृष्टि से रोकने के लिए एक निश्चित सुसंगठित प्रयास करने की आवश्यकता अब दयानन्द को झकझोरने लगी थी। वह एक ऐसी धर्मवेदी की संस्थापना करने के लिए उत्कण्ठित थे, जो वेदों की नींव पर फिर से आर्यधर्म का झण्डा खड़ा करके सारे देश को क्रमश: एक ही धर्मसूत्र में बाँध दे। साथ ही इस महादेश की मूल संस्कृति को ज्यों-की-त्यों अक्षुण्ण भी बनाए रख सके और अपनी महान् वाङ्मय-विरासत वेदों के अमूल्य रत्न-भण्डार को सुरक्षित और सर्वसुलभ कर सके जो अविद्याग्रस्त होने के कारण, पिछले कुछ काल प्रहारों से छिप गई है। अब उसे पुन: सही अर्थ जताकर जन-जन को उपलब्ध कराई जाए, यही लक्ष्य था दयानन्द का।

यही विचार अब उनके मन में मूर्त्तिमान् होने के लिए उचित मौका ढूँढ रहा था। अन्त में वह सुअवसर भी आ पहुँचा और दो वर्ष बाद मुम्बई में

www.thearyasamaj.org

10 अप्रैल, सन् 1875 ई० के दिन अपने महान् स्मारक 'आर्यसमाज' की नींव डालकर, अन्ततः उन्होंने उस धर्मवेदी की प्रस्थापना कर ही दी, जिससे कि आज हम सब सुपरिचित है।

दस नियम

इस संस्था के विधान के रूप में, स्वामी जी ने आरम्भ में 28 मूल धर्म-नियम निर्धारित किए थे। किन्तु 1877 ई० में लाहौर में 'समाज' की प्रस्थापना के उपरान्त, उनमें संशोधन करके केवल निम्न 10 नियम ही स्थापित कर दिए गए। वही तब से 'आर्यसमाज' की मुख्य आधारशिला बने हुए है—

प्रचार और संगठन

इन दस प्रधान नियमों के अलावा, 'समाज' की रचना, शासन-व्यवस्था, उपासना-विधि आदि-आदि के सम्बन्ध में कुछ उपनियमों तथा प्रजासत्तात्मक सिद्धान्तों पर निर्धारित एक मोटे संविधान का भी निर्माण साथ ही साथ कर दिया गया। ताकि यह संस्था एक सच्ची जन-प्रतिनिधि अनुशासनबद्ध धर्मवेदी का स्वरूप ग्रहण कर सके। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस महान् संस्था की प्रस्थापना के बाद, सन् 1877 ई० से 1883 ई० तक स्वामी जी के जीवन के अन्तिम छह-सात वर्ष उसका सुदृढ़ संगठन करने ही में व्यतीत हुए। उन्होंने देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करके स्थान-स्थान में उसके केन्द्र और उपासना-मन्दिर प्रस्थापित कर दिए। ताकि उसके मंच पर से धर्म, समाज और सुधार सम्बन्धी उनके विचारों का प्रचार होता रहे और उनके बाद भी वैदिक धर्म की पताका फहराती रहे।

इस कार्य में उन्हें सबसे अधिक सफलता पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान प्रान्तों में मिली। फलतः उत्तरी भारत के अनेक बड़े-बड़े नगरो में आर्यसमाज के मन्दिरों की वेदिकाएँ निर्मित हो गईं। वहाँ सप्ताह में एक बार नियमित रूप से वेदपाठ, मन्त्र-स्तवन और हवन आदि के द्वारा एक ही अनन्त अनादि परमेश्वर की आराधना-उपासना का एक नया दृश्य देखने को मिलने लगा। इन प्रार्थनाओं में जातिगत भेदभाव का कोई अटकाव नहीं था, अतः सभी वर्ग के लोग वहाँ आने लगे।

'वेदभाष्य', 'सत्यार्थप्रकाश' और अन्य रचनाएँ

स्वामी दयानन्द का प्रमुख कार्यक्रम वेदों का सही अर्थसंधान करके उन्हें पुनः हमारी वाङ्‌यमयवेदी पर पूर्वकालिक गरिमा के साथ द्युतिमान् करना था। यह इन ग्रन्थों के सही भाष्य के बिना सम्भव नहीं था। अतः अगाध परिश्रम करके अपने विशिष्ट दृष्टिकोण से उन्होंने स्वयं जनवाणी हिन्दी में वेदभाष्य प्रस्तुत करने का महान् बीड़ा उठाया। किन्तु हमारे दुर्भाग्य से, केवल शुक्ल यजुर्वेद-संहिता और ऋग्वेद-संहिता के आरम्भिक सात मण्डलों एवं अन्य कुछ अंशों का ही भाष्य वह प्रस्तुत कर पाए। शेष कार्य उनकी असामयिक मृत्यु के कारण, ज्यों-का-त्यों अपूर्ण पड़ा रह गया। इस भाष्य की सबसे बड़ी विशेषता है निरुक्त की विधि से मन्त्रों के शब्दों के यौगिक अर्थ की व्याख्या। इसके अधीन कई स्थलों पर सायण आदि पूर्वगामी भाष्यकारों से एकदम पृथक् अर्थ प्रस्तुत किया गया है।

वेदों के इन भाष्यों के अतिरिक्त उनकी अन्य कृतियाँ हैं - 'सत्यार्थप्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका', 'वेदाङ्गप्रकाश', 'संस्कारविधि', 'आर्याभिविनय', 'पञ्चमहायज्ञविधि', 'गोकरुणानिधि' तथा खण्डन-मण्डनात्मक कई एक अन्य छोटी-बड़ी पुस्तक-पुस्तिकाएँ। इनमें 'सत्यार्थप्रकाश' निर्विवादतः उनके विचारों का प्रतिपादन करनेवाला प्रतिनिधि ग्रन्थ है। ग्रन्थ हिन्दी

www.thearyasamaj.org

ही में है और उसके अन्त में 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' शीर्षक से एक परिशिष्ट भी दिया गया है। उसमें उनके अपने व्यक्तिगत मत विशेष का एक प्रकार से सारांश-सा आ गया है। आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व राष्ट्रभाषा हिन्दी में (जिसे वह गर्व के साथ 'आर्यभाषा' कहकर पुकारते थे) इन महान् ग्रन्थों का अनुवाद प्रस्तुत करके उन्होंने निस्संदेह महान् दूरदर्शिता का परिचय दिया है।

बलिदान और अन्त

सन् 1883 ई० के अन्तिम दिनों में, मारवाड़-नरेश का आमन्त्रण पाकर, स्वामी जी उपदेश के लिए जोधपुर पहुँचे थे। वहां राज्य के अतिथिगृह में टिककर हजारों नर-नारियों की उपस्थिति में कई दिनों तक नियमित रूप से वह धर्मप्रवचन करते रहे। इन्हीं दिनों की बात है कि उनके कतिपय विरोधियों और एक दुष्ट वेश्या के षड्यन्त्र से (जिसके साथ महाराजा के अनुचित सम्बन्ध पर स्वामी जी ने घोर विरोध प्रकट किया था) उन्हें गुप्तरीति से घातक विष पिला दिया गया। इससे उन्हें एक प्राणान्तक व्याधि लग गई। महाराजा साहब ने उनका उपचार कराने के लिए भरसक परिश्रम किया। परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त, वह उसी हालत में अजमेर लाए भरसक परिश्रम किया। परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में, वह उसी हालत में अजमेर लाए गए। वहीं संवत् 1940 वि० की दीपावली (30 अक्तूबर, सन् 1883 ई०) के दिन इस नश्वर शरीर को त्यागकर उन्होंने महानिर्वाण प्राप्त कर लिया। इस प्रकार आधुनिक भारत के उस ऋषितुल्य राष्ट्रगुरु के जीवन-नाटक का अन्तिम यवनिकापात महान् जीवन बलिदान के रूप में हुआ।

(श्री गजानन्द आर्य अभिनन्दन ग्रंथ से)

एक प्रतिशोध चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में है

❑ आनन्ददेव शास्त्री,
आर्यनगर, झज्जर

ब्रिटिश सरकार ने एक कमीशन भारत में भेजा, जिसके अध्यक्ष लार्ड साईमन थे। उस कमीशन में एक भी भारतीय नहीं था नहीं कोई पार्टी उस कमीशन से सहमत थी। चन्द्रशेखर आजाद ने सोचा कि साईमन को किसी प्रकार मारना चाहिए। आजाद ने लार्ड साईमन को मारने के लिए यथोचित्त प्रबन्ध किया, किन्तु अभी साईमन का समय नहीं आया था। कानपुर की फैक्टरी में तैयार बम लेकर मनमोहन मार्कण्डेय तथा एक अन्य को भेजा गया था। इन्होंने साईमन की रेल पर बम फेंकना था किन्तु क्रान्तिकारी बम को रेल में ही भूल गये। अतः साईमन बंच गया।

जब साईमन कमीशन लाहौर पहुंचा तो वहां की जनता ने एक विराट जुलूस उसके विरोध में निकाला। इस जुलूस का प्रबन्ध भगवती चरण तथा भगतसिंह ने "नौजवान भारत सभा" द्वारा किया था। जुलूस का नेतृत्व लाला लाजपत कर रहे थे। लाला जी उस समय सबसे बड़े कांग्रेसी राजनेता थे। सभी धर्म वाले उनका सम्मान करते थे। ब्रिटिश सरकार भी उनका यथोचित आदर करती थी। लाला जी उग्रदल के नेता समझे जाते थे।

वह जुलूस जब स्टेशन के पास पहुंचा तो स्थानीय पुलिस ने उनको वैसा ही सबक सिखाना चाहा जैसा जनरल डायर ने जलियावाला बाग में किया था। पुलिस जानती थी कि लाला जी जुलूस के नेता है। एस०पी० स्काट ने ए०एस०पी० को

www.thearyasamaj.org

आज्ञा दी लाठी चार्ज करके भीड़ को तितर-बीतर कर दें। कहा जाता है कि उसने वह संकेत लाला जी की ओर किया था। सांडर्स ने भीड़ पर लाठी चार्ज करते हुए तीन लाठियां लाला जी को भी मारी। लाला जी के शरीर पर इनके निशान मृत्यु पर्यन्त थे। उनकी मानसिक चोट अकथनीय थी। लाला जी के इस चोट के कारण 17 नवम्बर 1928 को स्वर्ग सिधार गये। किन्तु अपने पीछे लोगों में क्रोध की ज्वाला छोड़ गये। स्वयं कांग्रेसी भी उस समय कहने लगे थे कि क्रान्तिकारियों को लाला जी की हत्या का बदला लेना चाहिए।

लाला जी की मृत्यु के बाद लाहौर में एक शोकसभा हुई। उस सभा में श्रीमती वसन्ती देवी धर्मपत्नी श्री चिन्तरंजन दास (कलकत्ता) ने कहा था 'लाला जी की चिता ठंडी होने के पूर्व ही कोई युवक खून का बदला लेगा। स्मरण रहे श्री चितरंजन बंगाल के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता थे। चन्द्रशेखर आजाद ऐसे सुअवसर को हाथ से नहीं छोड़ना चाहते थे। वे सीधे लाहौर पहुंचे और भगवतीचरण, सुखदेव तथा भगतसिंह से मिले। उनसे मिलकर स्काट की हत्या का प्रबन्ध करना शुरू कर दिया। राजगुरु को भी लाहौर बुला लिया गया।

उस समय तक कितने ही युवक पंजाब के युवक दल के सदस्य बन गये थे। सुखदेव पंजाब के संगठनकर्त्ता नियुक्त किये गये थे। प्रत्येक सदस्य को एक आने से चार आने तक खर्च के लिए मिलते थे। जिससे उन्हें दोनों समय के भोजन का खर्चा चलाना पड़ता था।

पुलिस का ऑफिस जहां स्काट बैठता था, बहावलपुर रोड की एक कोठी में था। आजाद ने जयगोपाल को स्काट के आने जाने का समय नोट करने की ड्यूटी लगाई। एक सप्ताह बाद जयगोपाल ने बताया कि वह स्काट को पहचानता है तथा उसका आने जाने का समय भी नोट कर लिया है। आजाद ने एक्शन की पूरी योजना तैयार कर सब को उनके काम समझा दिये। जयगोपाल का काम था स्काट के बारे में बताकर वहां से भाग जाना। भगतसिंह को स्काट पर गोली चलानी थी। राजगुरु को आवश्यकता पड़ने पर भगतसिंह की मदद करनी थी तथा आजाद ने उन दोनों की रक्षा की जिम्मेदारी सम्भाली।

दल द्वारा तीन साईकिलें मंगवाई गई, जो डी०ए०वी० कॉलेज की चार दीवारी के भीतर रक्खी गई। एक्शन हो जाने के बाद तीनों क्रान्तिकारियों ने साईकिल पर बैठकर भाग जाना था। ऑफिस से 17 सितम्बर 1928 को चारों साथी निश्चित समय पर जब स्काट प्रायः ऑफिस से बाहर निकला करता था, वहां पहुंचा गये। तीनों साईकिलें डी०ए०वी० कॉलेज परिसर में रखी दी गई। परिसर के चारों तरफ एक छः फुट ऊँची दीवार थी। उस दीवार के साथ, बहावलपुर रोड की ओर एक तीन फुट गहरी तथा दो फुट चौड़ी नाली खुदी हुई थी। चारों साथियों का वहां पहुंचे थोड़ा ही समय हुआ था कि एक अंग्रेज ऑफिस से निकल सीढ़ियों से नीचे उतरा। जयगोपाल ने घबराहट में उसे ठीक से न पहचानकर उसकी ओर संकेत कर दिया तथा स्वयं हॉस्टल की चारदीवारी के अन्दर जाकर आदेश के विरुद्ध तीन साईकिलों में से एक साईकिल उठाकर चलता बना। उधर जब वह अंग्रेज बाहर आकर मोटर साईकिल को स्टार्ट करने लगा तो भगतसिंह को पिस्तौल निकालने में कुछ विलम्ब हुआ। राजगुरु ने देखा कि अमूल्य समय बीता जा रहा है और सम्भव है चिड़िया ही हाथ से निकल जाये। वह आगे बैठा तथा अंग्रेज को गोली का निशाना बनाया।

www.thearyasamaj.org

भगतसिंह भी तब तक सम्भल चुका था, उसने भी तीन-चार गोलियां अंग्रेजस पर दाग दी। दोनों उस अंग्रेज को धरती पर गिरता देख, होस्टल की चारदीवारी फांदने के लिए पीछे लौटे। इतनी देर में एक अन्य सफेद चमड़ीवाला व्यक्ति उनकी ओर पिस्तौल लेकर लपका। आजाद ने उसे आता देख उसे आगे न बढने की चेतावनी दी तथा उसके न रूकने पर उसके ऊपर नहीं अपितु उसकी तरफ गोली चलाई। वह व्यक्ति इन्सपैक्टर फर्न था। उसे गोली नहीं लगी थी फिर भी वह तीन फुट गहरी नाली में लेट गया जैसे गोली उसे ही लगी हो। कुछ क्षण बाद एक भारतीय सिपाही भगतसिंह तथा राजगुरु की ओर रिवाल्वर लेकर दौड़ा। आजाद ने उस व्यक्ति को आता देख ऊँचे स्वर में कहा-रुक जाओ वर्ना मारे जावोगे। वह बढता ही गया और आजाद को लाचार होकर गोली चलानी पड़ी वह एक ही गोली में ढेर हो गया। दरअसल आजाद ने उसे दो बार चेतावनी दी थी। इस व्यक्ति का नाम चाननसिंह था। यह पुलिस इन्सपैक्टर था।

अब आजाद ने भी हॉस्टल की दीवार फांदी और अंदर राजगुरु तथा भगतसिंह से जा मिले। वहां से ही साईकिलें देख आजाद एक साईकिल पर सवार हो गये तथा दूसरी राजगुरु ने चलानी आरम्भ की। उसके पीछे कीले पर भगतसिंह खड़ा हो गया। पुलिस के लोगों ने भी उनका पीछा करना नहीं छोड़ा था वे शोर मचाते जा रहे थे - ''पकड़ो, पकड़ो चोर है, डाकू है, हत्यारा है'' इत्यादि। एक साईकल पर दो सवार होने के कारण उनकी गति तेज नहीं हो पाती थी तथा पीछा करनेवाले लोग भी समीप आते जा रहे थे। रास्ते में एक साईकिल की दुकान आई। वहां भगतसिंह ने एक साईकिल खड़ी देखी। समीप आते ही वह राजगुरु की साईकिल से कूद कर उस खड़ी साईकिल पर सवार हो गया तथा तीनों चलते बने। उस साईकिल दुकान का मालिक भी पकड़ो पकड़ो, चोर, चोर कहता हुआ पीछा करने वाले दूसरे समूह में शामिल हो गया। परन्तु अब वे नौजवान तीन साईकिलों पर सवार थे। अत: उनको पकड़ना आसान न था। जब पीछा करनेवाले लोग आंखों से ओझल हो गये तो तीनों एक खेत में घुसकर दूसरी ओर निकल गये तथा फिर अपने स्थान ''मौजंग'' पर पहुंच गये। इस प्रकार दल ने लाला लाजपत राय के अपमान का बदला ब्रिटिश सरकार के एक एजेन्ट साण्डर्स को मारकर लिया, जिसने लोगों के उबलते हुए जोश और क्रोध को कुछ शान्ति दी तथा आम जनता को गर्व के साथ सिर उठाने का अवसर प्रदान किया।

साण्डर्स के वध से केवल लाहौर या पंजाब में ही नहीं अपितु समस्त भारत में सनसनी फैल गई। लाहौर में तो पुलिस तथा सी०आई०डी० ने शहर को चारों ओर से घेर नाके-नाके पर रोक लगा दी। चलते फिरते पुरुषों की तलाशी लेने लगे। गिरफतारियाँ भी अन्धाधुन्ध की गई परन्तु चन्द्रशेखर आजाद आदि को पकड़ने में सरकार असफल रही।

18 सितम्बर को साण्डर्स वध के दूसरे दिन सारे नगर में सी०आई०डी० की आंखों में धूल झोंककर एक लाल पर्चा बांटा गया, जिसमें लिखा था कि - ''साण्डर्स को मारकर लाला लाजपतराय के अपमान का बदला ले लिया है। साथ ही उस पर्चे में ब्रिटिश सरकार को चेतावनी भी दी गई थी।

इसप्रकार चन्द्रशेखर आजाद जिस कार्य को हाथ में ले लेते थे, उसे पूरा करने में कसर नहीं छोड़ते थे। ऐसे वीरों के बलिदान के कारण ही भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। ऐसे वीरों के जीवन से युवकों को प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

स्वामी श्रद्धानन्द
शिलान्यासकर्ता

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रतिष्ठाता

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त आर्षपाठविधि के निःशुल्क शिक्षाकेन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

101वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक 25-26 फरवरी 2017 (शनिवार-रविवार) को

हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्यजगत् के साधु-संन्यासी, हरयाणा तथा भारत सरकार के राजनेतागण एवं वैदिक विद्वान् पधार रहे हैं जो निम्नलिखित हैं–

संन्यासी

स्वामी धर्मानन्द जी (उड़ीसा)
स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली)
स्वामी देवव्रत जी (प्रधान संचालक, आर्य वीर दल)
स्वामी सम्पूर्णानन्द जी (कुरुक्षेत्र)
स्वामी कर्मपाल जी (अध्यक्ष, सर्वखाप पंचायत)
स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.)
आचार्य हरिदत्त जी (गुरुकुल लाढ़ौत)

राजनेता

चौ. वीरेन्द्रसिंह जी (ग्रामीण विकास मंत्री, भारत)
प्रो. रामविलास शर्मा जी (शिक्षामंत्री, हरियाणा)
श्री ओम्प्रकाश धनखड़ जी (कृषि मंत्री, हरियाणा)
स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद सीकर, राजस्थान)
श्री विजयसिंह लोहचब जी (पूर्व विधायक, दिल्ली)
श्री नफेसिंह राठी जी (पूर्व विधायक बहादुरगढ़)
श्री धर्मपाल आर्य जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)
श्री विनय आर्य जी (मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)
श्री वेदमान जी (समाजसेवी, दिल्ली)

विद्वान्

डॉ. महावीर मीमांसक जी (दिल्ली)
डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी (कुलपति गुरुकुल कांगड़ी)
डॉ. महावीर जी अग्रवाल (पूर्व-कुलपति सं.वि.वि., उत्तराखण्ड)
डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी (एम.डी.यू. रोहतक)
डॉ. आनन्दकुमार जी (गृह मन्त्रालय, भारत)
डॉ. बलवीर आचार्य जी (रोहतक)
श्री सत्यवीर शास्त्री जी (पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा)
प्रो. ओमकुमार जी (जीन्द)
डॉ. सुधीरकुमार जी (ज.ने.वि.वि., दिल्ली)

आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक **श्री तेजवीर, श्री प्रमोद शास्त्री** आदि प्रसिद्ध गायक भी पधार रहे हैं। अतः आपसे निवेदन है कि परिवार और इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्म लाभ उठायें एवं महोत्सव की शोभा बढ़ायें।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ

महोत्सव के निमित्त 13 फरवरी से ऋग्वेद पारायण महायज्ञ **श्री जगदेवसिंह जी पूर्व प्रिंसिपल** के ब्रह्मत्व प्रारम्भ होगा। इसके लिये घृत, सामग्री और समिधा का दान आना भी प्रारम्भ हो चुका है। प्राणिमात्र के कल्याणकारी इस पवित्र यज्ञ में घृत, सामग्री, गूगल, समिधा आदि के रूप में आप सभी का सहयोग वांछित है। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें जिससे उनकी व्यवस्था की जा सके। ऋग्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 26 फरवरी रविवार को प्रातः 9 बजे होगी।

व्यायाम प्रदर्शन

25 फरवरी शनिवार सायं 4 बजे **ठाकुर विक्रम सिंह जी की अध्यक्षता में** गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा **डॉ० स्वामी देवव्रत सरस्वती** प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीरदल के मार्गदर्शन में विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया जायेगा जिसमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखंभ, लाठी, भाला, तलवार, धनुष-बाण, लोहे के सरिये को गले से मोड़ना, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य के बल से बेल तोड़ना एवं जीप रोकना आदि होंगे।

सूचना

1. गुरुकुल की स्वामिनी 'विद्यार्य सभा' का साधारण वार्षिक अधिवेशन 25 फरवरी को रात्रि के 8 बजे होगा। सभी सदस्य समय पर पधारें।
2. 2100/- रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों, समाजों और ग्रामों के नाम पत्थर पर अंकित किये जायेंगे।
3. 11000/- रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से पत्थर लगेगा।
4. 51000/- रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से ग्रेनाइट (काला पत्थर) लगेगा।
5. एक लाख वा अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम का पत्थर तथा चित्र गुरुकुल के मुख्य स्थल पर लगाया जायेगा।
6. ऋतु अनुकूल वस्त्र, बिस्तर साथ अवश्य लायें। भोजन तथा आवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

निवेदक

डॉ. योगानन्द शास्त्री	**आचार्य विजयपाल**	**पूर्णसिंह देशवाल**	**राजवीर छिक्कारा**
कुलपति, गुरुकुल झज्जर	आचार्य, गुरुकुल झज्जर	प्रधान, विद्यार्यसभा, गुरुकुल	मन्त्री, विद्यार्यसभा, गुरुकुल
M.: 9818147999	M.: 9416055044	M.: 8053178787	M.: 9811778655

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

वीर विनायक दामोदर सावरकर

❑ नन्दलाल शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

महाराष्ट्र में नासिक जिले के भगूर ग्राम में एक चितपावन ब्राह्मण गृहस्थ दामोदर पन्त सावरकर रहते थे। उनके चार सन्तान थी। प्रथम गणेश पन्त या बाला सावरकर, द्वितीय विनायक सावरकर, तृतीय मोताबाई और चतुर्थ नारायण राव सावरकर थे। विनायक का जन्म 1883 ई० में हुआ था। यही वह दिव्य बालक था, जो आगे चलकर ''क्रान्तिकारियों का राजकुमार'' बना जिसे विदेशी लोगों ने भी हुतात्मा की पदवी दी और योरुपीय राजनीतिज्ञों ने मेजनी गेरी बाल्डी क्रोपाट किनु बुल्फटोन और एमेट कहकर उसकी खूब प्रशंसा की। जिसे हिन्दुओं ने हिन्दू-राष्ट्रपति छत्रपति शिवा के रूप में मान्यता दी। विनायक के पिता दामोदर पन्त सावरकर अच्छे विद्वान् और बहुत अच्छे कवि भी थे। वे अपनी सन्तान में अच्छी भावनाएं भरने के लिए रामायण, महाभारत की शिक्षाप्रद कथायें, शिवाजी, महाराणा प्रताप, भाऊ बाजीराव प्रथम आदि देशभक्त वीरों के जीवन तथा गीत सुनाया करते थे। इसी कारण विनायक की बुद्धि का विकास बाल्यकाल में ही हो गया था, वे आठ वर्ष की आयु में कविता करने लगे थे। जब उनकी आयु दस वर्ष की थी, तभी इनकी बनाई हुई कवितायें मराठी के प्रसिद्ध पत्र जगद्धितेच्छु आदि में बड़ी उत्सुकता से छापी जाती थी। वह अल्पायु में ही अपने मित्रों में विद्वान् देशभक्त और औजस्वी वक्ता के रूप में पूज्य भाव में देखे जाते थे। जब ये दस वर्ष के ही थे। इनकी माता का देहान्त हो गया, फिर पालन-पोषण का भार पिता जी पर ही पड़ गया। इनके पिताजी इनकी शिक्षा का भी बड़ा ध्यान रखते थे।

विनायक सावरकर ने राजनीतिक कार्य करते हुए भी अपने अध्ययन की कभी उपेक्षा नहीं की। वे कभी भी किसी परीक्षा में अनुत्तीर्ण नहीं हुए। 1901 में उन्होंने अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर नासिक को छोड़ पूना में पहुँच फार्ग्यूसन कॉलिज में प्रवेश लिया। पढ़ते समय उन्होंने अपना राजनीतिक कार्य भी खूब उत्साह से किया। पढ़ते समय में इनकी इतिहास में स्वाभाविक रुचि थी। संसार की सभी क्रान्तियों का इतिहास इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में ही पढ़ लिया था। उस समय विदेशी वस्त्र बहिष्कार की अनेक कवितायें भी समाचार-पत्रों में छपती थीं। एक दिन समाचार-पत्रों में उन्होंने पढ़ा कि चाफेकर बन्धुओ ने अत्याचारी अंग्रेज रैण्ड प्लेग कमिश्नर और उसके एक साथी गोरे को गोली मारकर समाप्त कर दिया। विनायक के हृदय पर इस घटना का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने आंसू भरी आंखों से फांसी आदि दुःखद समाचार पढ़े, विनायक आप ही आप बोलने लगे ''चाफेकर उठती जवानी में चले गये, उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए सबकुछ न्योछावर कर दिया तो क्या मुझे खा-पीकर मौज उड़ाना ही शोभा देता है? उनका कार्य अधूरा पड़ा है, उनकी इच्छायें अपूर्ण खड़ी हैं। क्यों न मैं प्रतिज्ञा करूं कि उनके कार्य को पूरा करने में अपने प्राण तक दे डालूँ। मैं उसे पूर्ण करूँगा अन्यथा उसके प्रयत्न में जीवन दे डालूंगा।'' तत्पश्चात् के दुर्गा मूर्ति के सम्मुख उपस्थित होकर शिवा जी की भांति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रार्थना कर शक्ति मांगने लगे और फिर शान्त खड़े होकर उन्होंने प्रतिज्ञा की ''मैं भारत माता की श्रृंखालयें तोड़ने के लिए अपना जीवन अर्पण करूंगा, मैं गुप्त संस्थायें खोलूंगा, शस्त्र बनाऊंगा और समय आने पर हाथ में शस्त्र लेकर स्वतन्त्रार्थ लड़ता-लड़ता मरूंगा। सावरकर जी ने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ति के लिए अपना सारा जीवन कटकाकीर्ण बना लिया। उसी दिन से यह अपने कार्य में जुट गया। इन्हीं दिनों आपने 'अभिनव भारत' नाम की संस्था की स्थापना करके अपनी विचारधारा का प्रचार करना आरम्भ किया। इन्होंने नासिक में भी अपने साथी ढूंढ निकाले और 'मित्र

मेला' नाम से एक संस्था बनाई। यह इनका क्रान्तिकारी संगठन था। इस संस्था का उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्त करना था। यह संस्था अपना कार्य गुप्त तथा प्रकट रूप में दोनों प्रकार से करती थी। इसके अतिरिक्त नासिक की सभी प्रकट संस्थायें विनायक जी की अधीनता में कार्य करती थीं। इस 16-17 वर्ष की आयु में एक दिन में उन्हें तीन-तीन सभाओं में भाषण देने पड़ते थे। 1901 में इनकी संस्था सारे भारत में फैल गई थी। इस संस्था ने देश के युवकों को देशभक्ति की शिक्षा देकर भारत माता की मुक्ति के लिए हँसते-हँसते मरना सिखाया था। सन् 1901 में कॉलिज में प्रविष्ट हो कर कॉलिज के विद्यार्थियों को देशसेवा की शिक्षा देनी प्रारम्भ की। ये उन दिनों खुले रूप में स्वतन्त्रता और क्रांति का प्रचार करते थे। ''इटालियन क्रान्ति'' और ''क्रान्ति की सात पीढ़ियाँ'' सावरकर के ये दो व्याख्यान जिन्होंने सुने थे वे उन्हें श्रद्धा से स्मरण करते थे। 1905-06 ई० में स्वदेशी आन्दोलन का जोर हुआ। सावरकर भी पूर्ण शक्ति से जुट गये। इन्होंने पूना, नासिक आदि महाराष्ट्र के अनेक स्थानों पर स्वदेशी प्रचार के औजस्वी भाषण दिये। इनके भाषणों को सुनकर जनता मन्त्रमुग्ध हो जाती थी। वीर सावरकर ने विदेशी वस्त्रों की होली मनाने के लिए पूना की जनता को व्याख्यान देकर तैयार कर लिया। पूना के एक बड़े मैदान में कीमती विदेशी वस्त्रों का ढेर लग गया और उसमें आग लगाकर भारत में विदेशी वस्त्रों की सर्वप्रथम होली मनाई गई। इस समय वीर सावरकर ने भाषण में कहा - ''विदेशी वस्त्रों को जला दो और उसी प्रेम के साथ जला दो, जो प्रेम आप इनके साथ सुन्दरतादि के कारण रखते हो। इसी पवित्र अग्नि को साक्षी देकर आप सभी स्वदेशी का व्रत धारण करो। यह विदेशी वस्त्र नहीं बल्कि विदेशियों को ही हम जला रहे हैं। 1905 में सावरकर ने बी०ए० पास करके संस्थाओं के संगठन में लग गए। ये एक गायक मण्डली साथ लेकर महाराष्ट्र के अनेक नगरों में प्रचारार्थ गये। प्रचार यात्रा से लौटकर सावरकर जी वकालत पढ़ने बम्बई चले गये। उन्हीं दिनों जगद्गुरु महर्षि दयानन्द के प्रिय शिष्य श्याम जी कृष्णा वर्मा ने घोषणा की कि वह भारतीय विद्यार्थियों को विदेश के स्वतन्त्र वातावरण में राजनीति का अध्ययन करने के लिए छः छात्र वृत्तियाँ, एक सहस्र रुपया प्रति छात्रवृत्ति के लिए मासिक देंगे। वीर सावरकर ने छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र भेजा। लोकमान्य तिलक और श्रीयुत परांजय के प्रशंसा पत्रों से यह कार्य सहज में पूर्ण हो गया। विदेश जाने से पूर्व इनका विवाह जाहर राज्य के कश्मीरी (दीवान) श्री चिपलूणकर की बड़ी लड़की से हो गया। इससे इन्हें आर्थिक कठिनाई से भी कुछ छुटकारा मिला। मई 1906 में 22 वर्ष की आयु में सावरकर ने लंदन की ओर प्रस्थान किया। नासिक की जनता ने उन्हें सार्वजनिक विदाई दी। कहा - ''हम चाहते हैं कि आप शीघ्र ही लौटकर हमारे पास आकर रहें।'' इंग्लैण्ड पहुंचे पर श्याम जी कृष्ण वर्मा ने वीर सावरकर का स्वागत किया। पं० श्याम जी उन दिनों होमरूल आन्दोलन चला रहे थे। जिनको चलाने से कांग्रेस के मुख्य नेता भी उस समय डरते थे। परन्तु सावरकर ने लंदन पहुंचकर एक ही वर्ष में इस तेजी से वातावरण बदला कि होमरूल आंदोलन भी एक नरम आंदोलन प्रतीत होने लगा। वहाँ पर ''फ्री इण्डिया'' नाम की संस्था खोली गई। उसमें सावरकर का इटली, फ्रांस अमेरिका आदि देशों की क्रान्ति पर ओजस्वी भाषा होता था। से सभायें खुले रूप में होती थीं। इसमें प्रत्येक भारतीय सम्मिलित हो सकता था। श्याम जी सावरकर से अपने पुत्र समान प्रेम करते थे। वे भी उनका पितृतुल्य अथवा गुरु के समान आदर करते थे। इण्डिया हाउस सावरकर के हाथ में आने के पश्चात् ''अभिनव भारत'' संस्था ने वे आश्चर्यजनक कार्य किये जिनका संपूर्ण इतिहास आज तक जनता के सम्मुख किसी ने प्रकट नहीं किया।

वीर सावरकर के इन प्रयत्नों से "अभिनव भारत" भारतीय राजनीति में ऐसी शक्तिशाली संस्था बन गई कि अंग्रेजी सरकार वर्षों तक इसे कुचलने में व्यस्त रही। एक दिन भारतीय भवन में एक सभा हो रही थी, नवयुवक कुछ करने के लिए उतावले हो रहे थे। धन इकट्ठा किया गया। एक मराठा युवक, एक बङ्गाली और एक मद्रासी ये तीनों बम बनानां सीखने के लिए सावरकर की प्रेरणा पर पेरिस गये। वीर विनायक भारतीय विद्यार्थियों को फ्री इण्डिया सोसायटी के भवन में इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र पर सार्वजनिक व्याख्यान भी देते थे। क्रान्तिकारी अपने प्रथम बम का प्रयोग इङ्गलैण्ड में ही करना चाहते थे परन्तु ऐसा करने से सावरकर ने उन्हें रोक लिया। क्योंकि भारत तक यह कला पहुँचने से पूर्व ही सब कार्य बिगड़ जाता। कुछ शिक्षक इस बम बनाने की कला को सिखाने के लिए भारत भेजे गये। इन्हीं बमों का फिर भारत में अनेक स्थानों पर प्रयोग किया गया। इस प्रकार इस समय "भारतीय भवन" आश्चर्यजनक कार्यों का केन्द्र बना हुआ था। प्रतिदिन सहस्त्रों विज्ञापन छापे जाते थे। उन्हें भारत के विविध भागों में बांटने के लिए भेजा जाता था, इन सब कार्यों में सावरकर का हाथ सबसे अधिक रहता था। इन्हीं दिनों सावरकर ने बैरिस्टरी की अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। जब प्रमाणपत्र देने का समय आया तो लार्ड मारले और कुछ इण्डियन्स ने सावरकर पर राजद्रोह का अभियोग चलाया। भारत सरकार ने भी सहायता की। सावरकर ने इन आपेक्षों का उत्तर दिया। न्यायालयों ने निर्णय दिया कि प्रमाण पत्र दे दिया जाये किन्तु आगे को राजद्रोह न करने की प्रतिज्ञा इनसे करा ली जाये। सावरकर ने उत्तर दिया "यह कभी नहीं हो सकता क्योंकि यदि मैं कभी राजद्रोह करूं तो सरकार मुझ पर अभियोग चला कर दण्ड दे सकती है, फिर आश्वासन देने की आवश्यकता ही क्या है। इन्हें उस समय प्रमाण पत्र न देकर जब्त कर लिया गया। बैरिस्टरी जैसे पद पर इस प्रकार लात मारने वाले बैरिस्टर वीर सावरकर ही थे। श्री सावरकर 1910 ई० में 26 वर्ष की आयु में बैरिस्टर के स्थान पर कैदी का वेशधारण कर मातृभूमि के अंतिम दर्शनार्थ चल पड़े। भारतीय पुलिस और स्काटलैंडयार्ड के चुने हुए अधिकारियों का बड़ा सख्त पहरा था। उन्हें दिनों भारत जाने के लिए इंङ्गलिश खाड़ी को पार कर फ्रांस उतरकर रेलगाड़ी द्वारा इटली और वहाँ से समुद्री जहाज पर सवार हो भारत आते थे। किन्तु अंग्रेज सरकार इन्हें फ्रांस वाले मार्ग से न ले जाना चाहती थी, क्योंकि उन्हें ज्ञात हो गया था कि सावरकर के फ्रांस की भूमि पर उतरते ही पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा अंग्रेजी पुलिस पर सावरकर को बलपूर्वक कैद करने का दावा फ्रेंच न्यायालय पर चलायेंगे। अत: इस मार्ग को छोड़कर बिस्के की खाड़ी से ले जाने का निश्चय था। अंग्रेजी पुलिस सावरकर को पकड़ने की चतुरता के कारण बड़े अभिमान में थी। सावरकर भी मन में स्वतंत्र होकर भागने का विचार कर रहे थे। जहाज को दूसरे मार्ग से जाना था किन्तु न जाने वह कैसे मार्सेल्ज (फ्रांस) होकर ही जाने लगा। सावरकर इस प्रतीक्षा में थे कि सम्भव है कि कुछ भारतीय वीर मेरी मुक्ति के लिए यहाँ आये हो। जहाज ने मार्सेल्ज में लङ्गर डाला परन्तु दूर तक वहाँ कोई सहायक दिखाई न दिया। अब सावरकर स्वयं ही कुछ करने की सोच रहे थे, किन्तु पुलिस का पहरा पहले से भी सख्त था। शौच, स्नान के समय भी वह अड़कर खड़ी हो जाती थी। सामने लगे हुए दर्पण पर इनका प्रतिबिम्ब देख इनकी प्रत्येक चेष्टा पर ध्यान रखती थी। सावरकर की सारी रात इसी उधेड़ बुन में बीती, प्रात:काल हुआ और जहाज के चलने का समय हुआ। सावरकर ने निश्चय किया कि अभी कुछ हो सकता है। "अभी वा कभी नहीं।" वे अपनी कोठड़ी में घुसे। कोठड़ी के ऊपर एक छोटी-सी खिड़की (पोर्ट होल) कुछ खुली हुई थी। शीघ्रता से अपना गाउन उतारकर दरवाजे पर डाल दिया। सिपाही जो पहरे में था उसको

www.thearyasamaj.org

अंदर का दृश्य दिखना बन्द हो गया। अभी सिपाही संभल भी न पाया था कि वे कूदकर खिड़की तक जा पहुंचे, सिपाही बोले ''क्या करता है ? क्या करता है'' द्वार बन्द था। उसने शोर मचाया, द्वार तो क्रोध में सिपाही ने तोड़ दिया किन्तु इस समय वीर सावरकर शीघ्र ही खिड़की में घुसकर सिपाही के अन्दर आने से पूर्व बाहर निकलकर धड़ाम से समुद्र में कूद पड़ा। निशाना साधकर सावरकर पर गोलियां चलाईं गईं किन्तु वे डुबकी लगाकर निशाना बचाते हुए लहरों पर उछलते हुए आगे ही बढ़ते गये। सावरकर जी उस समय अंग्रेजों से बचकर एक फ्रेंच सिपाही के पास पहुँचे लेकिन उसमें रिश्वत लेकर सावरकर को अंग्रेजों को सौंप दिया और अंग्रेज उन्हें बंदी बनाकर बम्बई ले आये। यह समाचार पेरिस से निकलने वाले 'लाह्य मैनिटी' नामक साम्यवादी पत्र में छपा था। उसे सावरकर से बहुत सहानुभूति थी। उसने फ्रांस में खूब हलचल मचाई। इसके पश्चात् दूसरे पत्रों ने भी तीव्र आंदोलन किया। चीन से लेकर मिश्र तक सभी पत्रों ने फ्रेंच मांग का जोरदार समर्थन किया। फ्रेंच प्रतिष्ठा की अपील करते हुए एक हृदय स्पर्शी लेख सावरकर ने नासिक की हवालात में लिखा और वह वहाँ से निकलकर पेरिस के भारतीय क्रान्तिकारियों पं० श्याम जी आदि के पास पहुँचा। फ्रांस सरकार की इस विषय में टक्कर हो रही थी। इस झगड़े को शांत करने के लिए यह विषय हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय को सौंप दिया गया। इधर भारत और इङ्गलिश दोनों सरकारें पच्चीस वर्ष के भारतीय वीर युवक सावरकर के प्राण के लिए लाखों रुपये व्यय करके हेग न्यायालय के लिए अपने केस तैयार कर रही थी। इधर भारत के क्रांतिकारियों को दण्ड देने के लिए ''स्पेशल ट्रिब्यूनल एक्ट'' पास करके एक ट्रिब्यूनल बनाया गया था। इसके निर्णय की अपील नहीं हो सकती थी। इसी ट्रिब्यूनल के सम्मुख बम्बई हाई कोर्ट में सावरकर और उनके साथियों पर अभियोग पर चलाया गया।

सशस्त्र सैनिकों द्वारा घिरी हुई बन्द मोटर में सावरकर को बम्बई के हाईकोर्ट में हथकड़ी पहना कर ले गये। इनके न्यायालय में घुसते ही उनके साथी तीस चालीस नवयुवक अभियुक्तों ने जंजीरों से जकड़े हुए हाथों से अपनी वीर नेता का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया। प्राय: वे सभी अभियुक्त सावरकर से संबंध रखने वाले थे। इन्हीं में इनका छोटा भाई नारायण सावरकर भी था। इन सभी युवकों ने घोर कष्ट सहे किन्तु विश्वासघात नहीं किया। अभियोग प्रारम्भ हुआ। सरकार ने अपने पक्ष का जोरदार समर्थन किया। भारतीय दण्ड विधान की 121 धारा लगाई गई जिसका दण्ड फांसी या काली पानी ही मिलता था। मुख्याभियुक्त विनायक सावरकर थे किन्तु वे सर्वथा निरपेक्ष बैठे रहे। पूछने पर इन्होंने उत्तर दिया ''मैं अभियोग में सर्वथा भाग नहीं लूंगा। मुझ पर ब्रिटिश न्यायालय का नियम नहीं चल सकता, क्योंकि मुझे अन्तर्राष्ट्रीय कानून तोड़कर बलपूर्वक फ्रैंच भूमि पर से पकड़ा गया है। डेढ़ मास के पश्चात् निर्णय वीर सावरकर को सुनाया। जज ने कहा ''आप दोषी प्रमाणित हुए हैं, आपको प्राणदण्ड दिया जाना चाहिए था परन्तु हम आपको आजन्म काले पानी का दण्ड देते हैं। आपकी सब सम्पत्ति जब्त की जाती है।'' सिर झुकाकर 'वन्दे मातरम् बोलकर ये पीछे हट गये। इसके पश्चात् सब अभियुक्तों को चौदह वर्ष से लेकर तीन-तीन वर्ष तक के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। अन्य अपराधों के अतिरिक्त इन पर 'स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की जय हो' का नारा बोलने का भी अपराध था। निर्णय सुनते ही सब अभियुक्तों ने मिलकर जोर से 'स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की जय हो' का नारा लगाया। जज चौंक उठा, अधिकारी घूमकर कहने लगे ''पकड़ो, मारो, अब ये बंदी हैं।'' सिपाहियों ने तुरन्त वीर सावरकर को हथकड़ी पहनाकर सबसे पृथक् कर दिया। सब साथियों से अन्तिम विदाई ली। अब उन्हें अपने स्वजनों, छोटे भाई और प्यारे देश से इस जीवन में फिर कभी

www.thearyasamaj.org

मिलने की आशा नहीं थी। किन्तु सरकार एक जन्म काले पानी के दण्ड से संतुष्ट न थी। नासिक के क्लेक्टर की हत्या करने में सहायता करने के अपराध में अभियोग चलाया। ये प्राणदण्ड की आशा से न्यायालय में गये, किंतु अब की बार भी काले पानी की ही आज्ञा हुई। अपने मित्रों द्वारा सफाई देने की प्रार्थना करने पर भी अपने पूर्ववत् मुकद्दमें में भाग नहीं लिया। इस प्रकार मृत्यु को खुली चुनौति देकर ब्रिटिश न्यायालय से असहयोग करने वाला प्रथम असहयोगी वीर सावरकर ही था। दण्ड सुनकर वीर विनायक सावरकर बोले, ''मैं प्रसन्न हूँ कि मुझे दो जन्म की काले पानी की सजा देकर सरकार ने हिन्दू धर्म का पुनर्जन्म का सिद्धान्त तो मान लिया। मेरा विश्वास है कि केवल कष्ट सहन और बलिदान से ही हमारी मातृभूमि यदि शीघ्र नहीं तो विलम्ब से निश्चित ही विजय प्राप्त करेगी। इसलिए मैं आपके विधान द्वारा दिये गये कड़े से कड़े दण्ड को सहन करने के लिए प्रस्तुत हूँ। पचास वर्ष का कठोर कारावास देकर ये बम्बई के डोंगरी के जेल में भेज दिये गये। अब हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय की प्रतिक्षा की जाने लगी। हेग न्यायालय का निर्णय आया कि ''अपराधी फ्रांस की भूमि पर होता तो इंगलैंड वाले उसको किसी प्रकार भी नहीं पकड़ते किन्तु जब वह फ्रांस के एक सिपाही की अज्ञानता से अंग्रेजी सरकार के अधिकार में चला गया है तो उसको किसी भी प्रकार से लौटाने के लिए विवश नहीं किया जा सकता।'' सावरकर की सब सम्पत्ति जब्त होने से इनका सब समान यहाँ तक कि गीता और चश्मा भी छीन लिये गये। अगले दिन गीता और चश्मा लौटा दिए। एक दिन समाचार मिला कि ''लंदन में एक सभा में भारतीयों ने एक बड़ा चित्र वीर सावरकर का मंडप की दीवार पर लगाया। उस दिन सर हेनरी काटन ने सभा में बोलते हुए चित्र की ओर संकेत करके इनके त्याग, साहस और देशभक्ति की प्रशंसा की। इससे अंग्रेजों में बड़ी सनसनी फैल गई। किसी ने कहा सर हेनरी की पेंशन बंद करनी चाहिए, किसी ने कहा उनकी उपाधि छीन लेनी चाहिए। सरकार ने डरकर उस समय के कांग्रेस के प्रधान वेडरवर्न और नेता सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने कलकत्ते की सार्वजनिक सभा में घोषणा की, कि हमारी सावरकर और इनके साथियों से तनिक भी सहानुभूति नहीं है। यह थी उस समय की कांग्रेस। इस जेल में एक मास रहने के पश्चात् इनको भायरवाला की कड़ी और एकान्त जेल में भेज दिया गया। भायरवाला रहते हुए इन्होंने मानसिक कष्ट सहा। फिर अण्डमान जाने का समय आ गया। अन्य बन्दियों के साथ बेड़ियां खनखनाते हुए हाथ में बर्तन लेकर बगल में बिस्तरा दबाये वीर सावरकर भी जेल द्वार से बाहर निकले। बन्दी लोगों की यह सेना पंक्तिबद्ध बेड़ियों के बजाती हुई मिलने वालों को नमस्ते, राम-राम कहकर 'चले भइया काले पानी को' जेल के आंगन से बाहर हो गई और सशस्त्र सैनिकों की देखरेख में दिल्ली पहुंच गई। किन्तु वीर सावरकर को गोरों के पहरे में स्टेशन पर पहुँचाया गया। बन्दी लोगों में सावरकर का सम्मान सरकार के यत्न करने पर भी घटने की अपेक्षा अधिक-अधिक बढ़ता ही गया। सावरकर को गाड़ी के एक पृथक् डब्बे में बन्द किया गया। हाथों में हथकड़ी और गोरों का सख्त पहरा साथ था। खिड़कियाँ बन्द थी। केवल एक स्टेशन पर सावरकर के दर्शन के लिए आये हुए गोरों के लिए खिड़कियाँ खोली गई। फिर गाड़ी चलकर मद्रास पहुंची। वहाँ एक छोटी नाव में बिठाकर इन्हें ''महाराजा'' नाम के जहाज गें बिठा दिया गया। सैंकड़ों दर्शक-टकटकी लगाकर इन्हें जहाज पर चढ़ते हुए देख रहे थे। लोहे के पिंजरे में इन्हें बन्द कर दिया, पहरेदार 'नमस्ते' कहकर चले गये। कई दिन के पीछे जहाज अण्डमान पहुँच गया। सिपाहियों के पहरे में सभी बंदी और सावरकर गोरों के पहरे में जेल द्वार पर ले जाये गये। द्वार में घुसते ही पहरेदारों ने इन्हें खड़े रहने की आज्ञा दी। द्वार बन्द

www.thearyasamaj.org

हो गया और वह फिर 14 वर्ष के पश्चात् वीर सावरकर के लिए खुला। बारी साहब जेलर एक दिन सावरकर से आकर कहने लगे 'मैं तो आपका मित्र हूँ लोग मुझे जेलर समझते हैं। मैं आप से खुलकर बात करना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि आपने सन् 1857 का नीचतापूर्ण इतिहास भी लिखा है। आपको दुष्टों की कथा लिखते हुए घृणा नहीं हुई। वे राक्षस थे अधम नाना साहब ने अंग्रेज स्त्रियों को महान् कष्ट दिये। नाना साहब और तात्या टोपे समान नीचों से आपको घृणा क्यों नहीं हुई। वीर सावरकर बोले, ''यह बन्दी घर है मैं बन्दी हूँ। ऐसी चर्चा करना उचित नहीं है, फिर भी आप उचित उत्तर चाहते हैं तो मैं मित्रभाव से उत्तर दे सकता हूँ।'' बारी साहब बोले – मैं मित्रभाव से पूछता हूँ। फिर सावरकर ने उत्तर दिया 'मैं अपने राष्ट्रीय इतिहास का अपमान सहना भीरुता समझता हूँ। सत्य कहने पर यदि मुझे दण्ड भी सहन करना पड़े तो मैं उद्यत हूँ। नाना साहब के विषय में अंग्रेजों द्वारा नियुक्त सरकारी कमीशन ने खोज करके सिद्ध किया कि अंग्रेज स्त्रियों पर नैतिक अत्याचार करने की कथायें असत्य और अतिरंजित हैं। इन पर तो यह झूठा दोष लगाया है किन्तु अंग्रेज सेनापतियों ने अनेक स्थानों पर दस-दस बाहर-बारह स्त्रियों का वध क्रान्तिकारियों को डराने के लिए किया। ग्राम जला डाले। सार्वजनिक संहार, लूट और निर्दोष भारतीय जनता की सैंकड़ों स्थान पर की। उनको आप दोष नहीं देते। उनकी तो इंग्लैण्ड और भारत में मूर्तियां स्थापित कर प्रतिष्ठा बढ़ाई गई, उनका आप मान करते हैं फिर अपने देश को स्वतन्त्र करने के लिए नाना साहब और तात्या ने अपूर्व बलिदान किया उनकी आप निन्दा करना कैसे उचित समझते हैं। सन् 1857 का विप्लव भारतीय जनता का स्वातन्त्र्य समर था, आप ऐसा क्यों नहीं मानते।'

अण्डमान में बन्दियों को बहुत कष्ट दिया जाता था। राजबन्दी सब पृथक्-पृथक् कोठड़ियों में बन्द कर रखे थे। आपस में एक अक्षर बोलने पर हथकड़ी, बेड़ी आदि कठोर दंड दिया जाता था। आपस में संकेत से कुशल पूछने पर हाथ में हथकड़ियां डालकर सात दिन तक खड़े रहने का भीषण दंड दिया जाता था। नारियल का छिलका कूटने का कार्य छुड़वा कर, उसके स्थान पर सबसे कठिन कार्य कोल्हू चलाने का कार्य लिया जाता था। बेचारे सुकुमार और सुशिक्षित बन्दी युवक जिनकी अवस्था 20 वर्ष के लगभग थी, उनको यह कष्टकर कार्य करना पड़ता था। कोल्हू चलाते-चलाते इनका दम फूल जाता था। सभी को चक्कर आने के कारण बैठ जाना पड़ता था। उसी समय जमादार चिल्लाता 'काम करो बैठो मत। शाम तक तैल पूरा करना होगा, नहीं तो पीटे जाओगे, सजा अलग होगी।' जो बन्दी सायंकाल तक पूरा तैल नहीं निकाल पाता था, उसकी लातों घूसों और डण्डों से बड़ी दुर्गति की जाती थी। यदि किसी दिन नारियल गीले होते और तैल पूरा नहीं निकलता तो बारी साहब बन्दी घर में आ घुसते धमकाकर कहते 'जो तीस पौंड तैल पूरा नहीं करेगा, उसे सायंकाल का भोजन नहीं मिलेगा। पांच छः बजे बन्दीघर के सब कार्य बन्द हो जाते थे किन्तु तैल पूरा करने के लिए नियम विरुद्ध 6 बजे तक कोल्हू चलाना पड़ता था। प्रातःकाल छः बजे से रात को 9 बजे तक निरन्तर कोल्हू चलाते रहते थे। बीच में एक बार थोड़ा सा अन्न पेट में डालने का थोड़ा सा समय मिलता था। बीमारों से भी कार्य लिया जाता था। 101 डिग्री का ज्वर होने पर अधिकारी ज्वर समझते थे। इससे कम ज्वर को ढोंग समझा जाता था। चोर डाकू तक तो रोगी होने पर हस्पताल भेजे दिये जाते थे किन्तु इन देश भक्तों को रोगी होने पर मरने के लिए कोठड़ियों में बन्द कर दिया जाता था। कितने ऐसे ही होनहार नवयुवक तड़फ-तड़फ कर वहीं मर जाते थे। ऐसे कष्टभोगी बन्दियों में गणेश सावरकर विनायक सावरकर के बड़े भाई प्रमुख थे। इन्हें

www.thearyasamaj.org

आधे सिर का दर्द घर से ही था। कोल्हू चलाने से पीड़ा में भी कोल्हू चलाना पड़ता था किन्तु वहां तो दो शब्द सहानुभूति के भी कहने वाला कोई न था। राजबन्दियों के लिए हस्पताल सर्वथा बन्द था। उनके लिए कोई औषध नहीं मिलती थी। ये तो अण्डमान में अत्याचार करके सर्वथा मारने के लिए ही भेजे जाते थे। सख्त काम, अन्न-वस्त्र का अभाव, मारपीट का कष्ट, इन देश-भक्त कैदियों को दिया जाता ही था।

यद्यपि सावरकर देश से 600 मील दूर अंडमान की कोटड़ी में बन्द थे। किन्तु भारतीयों ने अपने वीर नेता को एक दिन के लिए भी नहीं भुलाया। देशभर में सावरकर सप्ताह मनाया गया, उनके छुटकारे के लिए सत्तर हजार हस्ताक्षर से युक्त प्रार्थना-पत्र सरकार को जनता ने भेजा। साधारण व्यक्ति से लेकर नेताओं तक ने हस्ताक्षर किये किन्तु गाँधी जी ने हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया। 1920 में भाई परमानन्द जी बिना शर्त के अँडमान से छोड़ दिये गए। भाई जी लाहौर पहुँचे। उन दिनों ब्रिटिश पार्लियामेंट के प्रमुख सदस्य बैजवुड महोदय ला० लाजपत राय के यहां ठहरे थे। लाला जी ने भाई जी का परिचय करा दिया। भाई जी ने बातचीत करते हुए अंडमान की चर्चा की और सावरकर के स्वास्थ्य का वर्णन कर उन्हें तुरंत छोड़ने का आग्रह किया। बैजवुड ने एतदर्थ शक्तिभर यत्न करने का विश्वास दिलाया, उनके यत्न से सन् 1924 में सावरकर बन्धु अण्डमान से कलकत्ता लाए गये। चार दिन दोनों भाई साथ रहे। फिर गणेश जी अलीपुर जेल में तथा विनायक जी रत्नागिरी जेल में भेज दिए गए। रत्नागिरी जाते हुए इनको एक दो स्थान पर उतरने की आज्ञा मिली। नासिक में शोभायात्रा निकली। नासिक के पंचवटी के मन्दिर में डॉ० मुञ्जे के सभापतित्व में इनका सम्मान बड़े समारोह के साथ किया गया। इसके पश्चात् ये जेल से हटाकर रत्नागिरि जिले की सीमा में बन्द कर दिये गये। जिले भर में घूमने फिरने की स्वतन्त्रता इन्हें दे दी गई। इसका लाभ उठाकर इन्होंने हिन्दू सङ्गठन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। यह कार्य इतनी लगन से किया कि नजरबन्दी के तेरह वर्षों का इतिहास हिन्दू सङ्गठन का इतिहास है। रत्नागिरि की हिन्दू महासभा संगठन की दृष्टि से इनके पुरुषार्थ से सर्व प्रमुख हिन्दू सभा बन गई। अछूतोद्धार का आन्दोलन जोर से चलाया गया। सहभोज किये। पारस्परिक मिलाप से दलितों की अपने को हीन समझने की भावना जाती रही।

9 अक्तूबर 1939 को वायसराय ने हिन्दू महासभा के प्रधान सावरकर से एक घण्टे तक वार्तालाप किया। समय का चक्र है जिस व्यक्ति को अंग्रेजी सरकार ने दो जन्म का कारावास दिया था, जिसे जीवित देखना वह पाप समझती थी, आज उसी व्यक्ति से उसी सरकार का प्रतिनिधि, हाथ पसार कर सहायता की भिक्षा मांग रहा है। पेशवा-युग के पश्चात् यह प्रथम अवसर था, जब अखिल हिन्दू राष्ट्र ने एक व्यक्ति के रूप में अपनी मांगे विदेशी सरकार के सम्मुख रखी थी। इस भेंट से सावरकर का मान सारे भारतवर्ष में राजनीतिक दृष्टि से और भी बढ़ गया। 1936 में वीर सावरकर तीसरी बार हिन्दू सभा के सभापति चुने गये। कलकत्ता में यह अधिवेशन बड़े ठाठ-बाट के साथ हुआ। हिन्दुत्व के आन्दोलन के आधार पर वीर सावरकर के व्यक्तित्व, त्याग, तप, धैर्य, देशभक्ति और इनकी अनुपम वक्तृत्व शक्ति ने विशेष प्रभाव डाला।

सावरकर जी द्वारा लिखित 1857 का स्वातन्त्र्य समर नामक ग्रंथ प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य पढ़ना चाहिए। ग्रंथ छपने से पूर्व ही अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया था। परन्तु क्रान्तिकारियों की चतुरता से यह ग्रंथ छप गया था।

स्वतत्र भारत में सावरकर जी कष्ट सहते रहे और 26 फरवरी 1966 को यह वीर अपना नश्वर शरीर त्याग कर अमर होगया। ऐसे जीवित बलिदानी वीर को कोटिशः प्रणाम।

www.thearyasamaj.org

ऊँची जातियों का आरक्षण

❑ हरिशंकर परसाई व्यंग्यकार

आरक्षण यानी भेद की मानसिकता। आज भी बदस्तूर जारी है। नौकरी, पदोन्नति और तमाम सरकारी और गैर-सरकारी महकमों से कूदकर स्कूलों-कॉलेजों में भर्ती तक तो इसकी अमरबेल फैली ही है, लेकिन प्राचीनकाल से यह घरों में भी है। कैसे? किसी के यहां जाए तो खाने (यहां तात्पर्य भोजन से है) के पहले कहते हैं, पहले ब्राह्मण भोजन होगा, देखिए आरक्षण कहां तक समानता लाएगा—

पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण विरोधी आंदोलन के एक नेता मेरे पास आए थे। वे मेरा समर्थन चाहते थे। मैंने सोचा-ये या तो इस कारण आए हैं कि इन्हें पता लगा गया है कि मैं ब्राह्मण कुल में जन्मा हूँ, या इसलिए कि मेरी न्याय बुद्धि पर भरोसा था। मेरे उपनाम 'परसाई' से मेरी जाति का पता नहीं लगता। लोग सोच सकते हैं कि 'पारसा' (फारसी) से बना है यह 'परसाई'। यह कोई मुसलमान है या पारसी है, मगर लगाने वाले पता लगा लेते हैं कि मैं ब्राह्मण हूँ।

एक बार हमारे एक बंधु ने मुझे और एक दूसरे मित्र को जो उपनाम से घोषित ब्राह्मण हैं, भोजन के लिए बुलाया। हम उनकी बैठक में बैठे। भीतर कुछ पूजा हो रही थी। उन्होंने कहा- जरा देर और है। आज वाइफ के व्रत पूरे हुए हैं न, पूजा के बाद ब्राह्मण भोजन होगा। उन्हें मेरी जाति का पता लग गया था। हम समझे थे कि उसने हमें मित्र के नाते भोजन के लिए बुलाया है, मगर उसने हमें ब्राह्मण समझकर बुलाया था। मैंने प्रार्थना की - प्रभु, अगर ब्राह्मण को खिलाने से पुण्य होता हो तो आज हमें चांडाल बना दे। इस दुष्ट के हाथ पुण्य न लगे, जिसने हमें मात्र ब्राह्मण समझ रखा है।

मेरे उपनाम के साथ यही दिक्कत है - पाण्डे, मिश्र, शर्मा नहीं। न सक्सेना, श्रीवास्तव है। न चौहान, अग्रवाल, माहेश्वरी। इधर इस विश्वविद्यालय में काम करने आ गया हूँ तो सब विभागों में शोध का विषय है - परसाई की जाति क्या है। पीएचडी के लायक काम हो गया। शोध से पता चला कि ब्राह्मण हैं। डी.लिट या डीएससी के लिए कौन-सा ब्राह्मण है? कान्यकुब्ज, सरयूपारी या सनाढ्य? मैं विवश हूँ। कुछ नहीं कर सकता। इस समाज में ब्राह्मण धर्म परिवर्तन करके ईसाई या मुसलमान तो हो सकता है, मगर कायस्थ नहीं हो सकता। मैं कितनी भी घोषणा करूं कि मैं फलां हो गया, पर माना जाऊंगा ब्राह्मण ही।

आरक्षण-विरोधी आंदोलन के नेता जिन्हें शर्मा जी कहें, अपनी मान्यता के बारे में काफी आश्वस्त थे। कहने लगे - कैसा अन्याय है। कम नंबर हो तो भी अनुसूचित जाति लड़के-लड़की को मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज में भर्ती कर लिया जाता है। नौकरी में भी जगहें सुरक्षित हैं। फिर प्रमोशन की दस पोस्ट हों तो तीन उन्हें मिल जाती हैं। हम पढ़े-लिखे योग्य लोग क्या इसलिए वंचित हों कि हमने ऊँची-जाति में जन्म लिया है?

मैं समझ गया - हजारों साल पहले ऊँची जातियों ने यह मान लिया था - जो कुछ भी समाज में उपलब्ध है, हमारा है। वंचित रहना नीची जातियों का धर्म है। मान, प्रतिष्ठा, धन - सब ऊँची जातियों का अधिकार है। स्कूल में मेरे साथ बालों की कटिंग करने वाले का एक लड़का पढ़ता था। वह मुझसे ज्यादा होशियार था। मुझे गणित पढ़ाता और नकल भी कराता था। वह आता तो कहता - हरिशंकर, नमस्ते। मेरे चाचा ने उसे डांटा - तू फलां जात का होकर नमस्ते करता है। पालागी किया कर। उन्हें क्या पता कि उन जैसे श्रेष्ठ ब्राह्मण के भतीजे को वह पढ़ाता और नकल भी कराता था।

मुझे एक इंजीनियर ने बताया - हमारे

www.thearyasamaj.org

रेस्ट हाउस में एक दो दिन पड़ोसी जिले के कलेक्टर ठहर गए। दोनों युवा आईएएस - एक ब्राह्मण और दूसरा अजा। मैंने ब्राह्मण कलेक्टर से कहा - आप दोनों का खाना डाइनिंग रूम में लगवा दूं? वे बोले - नहीं, हम अपने कमरे में खाएंगे। वैसे तो शराब और मुर्गे से जाति भेद मिटता है, मगर इन ब्राह्मण कलेक्टर ने जाति बचाकर शराब पी और मुर्गा खाया। यह भेद एक पीढ़ी में नहीं मिटेगा, तीन पीढ़ियां लगेंगी। तीन पीढ़ी की उच्चवर्गीयता अजा से ब्राह्मण बना देगी।

मैंने कहा - शर्मा जी, सब कहीं रिजर्वेशन हो जाए तो कैसा रहे? ऊँची जातियों के लिए भी आरक्षण हो जाए। शर्मा जी की आंखें क्रोध से लाल हो गई। प्राचीन काल में इस विप्र क्रोध से मैं भस्म हो जाता, मगर इस कलियुग में नहीं हुआ। ब्राह्मण ने वह तेज खो दिया है, क्योंकि अब यह यज्ञ कार्य छोड़कर बाटा शू की दुकान में नौकरी करता है और अजा को अपने हाथ से जूते पहनाता है।

मेरे शहर में एक जिलेटिन फैक्ट्री है, जिसमें उत्पादन हड्डी से होता है। इसमें कायस्थ काम कर रहे हैं। धन की ताकत और उत्पादन की पद्धति से जाति टूट जाती है। पवित्र्य भावना खत्म हो जाती है। आदिम औजारों से सड़क पर जूते सीने वाला नीची जाति का है। जूतों के कारखाने में यही आदमी काम करेगा तो नीची जाति का नहीं, कारीगर होता हे और ऊंची जाति के मध्यवर्गियों में बैठता है।

शर्माजी को मैं कुछ भी नहीं समझा सका। ऐसे लोग अपने पक्ष के बारे में निश्चित होते हैं, मगर समाज के इस हिस्से के लिए आखिर क्या किया जाए? हजारों सालों से इन्हें ज्ञान-विज्ञान से वंचित रखा गया।

कहते हैं नीची जाति के लोग बराबरी की स्पर्धा में अपना हक लें। ऐसा कहने वाले सदियों से 'हैंडिकेप रेस' में अपने को आगे रखे हैं। आखिर ढिबरी और बिजली के बल्ब में बराबरी की स्पर्धा कैसे हो सकती है। अजा का लड़का ढिबरी में पढ़ता है। ऊंची जाति का लड़का बिजली के प्रकाश में पढ़ता है। उसके पास पूरी किताबें नहीं होतीं। इसके पास खूब किताबें होती हैं। यह ट्यूशन लगा सकता है। इसके माँ-बाप पढ़े-लिखे हैं, उसके अपढ़-गंवार। यह प्रभाव या पैसे से नम्बर बढ़वा सकता है। ढिबरी और बल्ब में बराबरी की स्पर्धा नहीं हो सकती।

रवीन्द्रनाथ टेगौर ने लिखा है - मेरे देशवासियो, तुमने अपने ही लोगों पर सदियों बहुत अत्याचार किए हैं। तुम्हें इस पाप का फल भोगना होगा। तो ब्राह्मणो, पाप का फल भोगो। अजा कलेक्टर के चरण छुओ। (दैनिक भास्कर रेवाड़ी 17.12.2015)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-

सारे संसार को आर्य बनाओ।

शुद्धि आन्दोलन

भारतवर्ष की रक्षा हेतु सभी, आर्यसमाजें, धार्मिक-संस्थाएं व देशभक्त संगठन अपने-अपने क्षेत्र में शुद्धि-आन्दोलन प्रारम्भ करें। जो भाई वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) को त्यागकर अवैदिक ईसाई-मुस्लिम व अन्य मत को अपना रहे हैं। उन्हें पुनः वैदिक धर्म में लाकर सभी प्रकार से मिलाने की पूर्ण व्यवस्था करें। अपने-अपने क्षेत्र में शुद्धि आन्दोलन के प्रचार प्रसार हेतु सम्पर्क करें।

निवेदक

स्वामी शुद्धबोध सरस्वती

गुरुकुल झज्जर, जि० झज्जर (हरियाणा)

9991503534

www.thearyasamaj.org

समाचार प्रभाग

कब होगा बोध हमें ऋषिवर

चहूँ ओर तिमिर था आच्छादित।
नहीं सत्य कहीं था प्रतिपादित॥
था घोर अविद्या का ही मण्डन।
होता चहूँ ओर यहाँ अक्सर॥
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 1॥
आ अंग्रेज यहाँ पर इठलाता।
थी शृंखलाओं में भारत माता॥
चहुँ दिश जसकी गौरव गाथा।
कवि व्योम सुनाते थे आकर॥
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 2॥
कभी विश्व गुरु था ये भारत।
कर दिया आज हमने गारत॥
थी चहुँ ओर पताका लहराती।
हर्षित होती दुनियाँ गाकर॥
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 3॥
ऋषिवर तुमने ही बतलाया।
आकर हम सबको समझाया॥
है भारत देश आर्यों का।
अब तो सम्भलो ठोकर खाकर॥
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 4॥
आज वही फूट अरु वही तिमिर।
नहीं कहीं ऋतुराज हर जगह शिशिर॥
मैं रोता हूँ पढ़कर पन्ने।
क्यों कर खोया तुमको पाकर॥
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 5॥
अब हन्दी पिटती, गऊएँ कटती।
छिन्न-भिन्न क्यों है संस्कृति॥
क्यों बने विदेशी वेद आर्य?
बतलाए अब कौन हमें आकर।
कब होगा बोध हमें ऋषिवर॥ 6॥

— **वेदप्रकाश आर्य**
113 ए० कलोकरी, नई दिल्ली

महात्मा प्रभु आश्रित निर्वाण अर्धशताब्दी समारोह

-: दिनांक :-
16 मार्च, 2017 से
19 मार्च, 2017 रविवार तक

-: स्थान :-
वैदिक भक्ति साधन आश्रम,
आर्यनगर, रोहतक

सभी यज्ञ प्रेमी साधकों को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आश्रम ट्रस्ट ने पूज्य महात्मा जी के निर्वाण के 50 वर्ष पूरे होने पर अर्ध शताब्दी समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाने का निर्णय लिया है जिसकी अध्यक्षता स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती करेंगे।

प्रस्तावित कार्यक्रम

यज्ञ : **प्रातः एवं सायं ब्रह्मा स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती**

वेदपाठ : **कन्या गुरुकुल वाराणसी की ब्रह्मचारिणियों द्वारा**

21 कुण्डीय यज्ञ जिसमें यजमान स्थायी होंगे।

निवेदक :

शशिमुनि, प्रबन्धक, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगरा, रोहतक-124001

सम्पर्क : 9899364721, आश्रम : 01262-253214

www.thearyasamaj.org

यज्ञ-अभिनन्दन समारोह

08.01.2017 को महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व० माता धापा देवी की पुण्यतिथि के अवसर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा कु० सुशीला आर्या प्राध्यापिका दिल्ली ने कहा कि यज्ञ हमें आपस में प्रेमभाव से रहने का सन्देश देता है और समाज के सभी व्यक्तियों को आपस में मिलजुलकर के रहना चाहिए तभी हमारा यज्ञ करना सार्थक है। वायुसेना में वारण्ट अधिकारी श्री महावीर सिंह ने सन्देश दिया कि मानव शरीर नश्वर है और आत्मा अविनाशी है। हमें अपने शरीर से शुभ कर्म करने चाहिएं ताकि हमारा जीवन सफल होवे। श्रीमती अरविन्द गार्गी प्रधाना महिला आर्य समाज झज्जर ने कहा कि स्वामी दयानन्द के बताए मार्ग और वेदों के अनुसार जीवन जीने से ही हमारा कल्याण हो सकता है। हमें सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए तभी सामाजिक वातावरण शुद्ध होगा। डॉ० मंगतराम, श्री दलीपसिंह, श्री वागीश आर्य आदि महानुभावों ने शुभ कर्मों में सभी के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया। राजकीय महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ० आजाद सिंह दूहन ने आर्यसमाज के सन्देश को घर-घर पहुँचाने के कार्यक्रमों को बढ़ाने का आह्वान किया। श्रीमती मामकोर एवं श्री रतिराम यजमान बने।

पं० रमेशचन्द्र वैदिक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि हमें माँ, बहन, पत्नी तभी मिलेगी जब बेटी बचेगी। हमें हरकीमत पर बेटी को बचाना होगा। इस अवसर पर प्रमुख सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को 'गायत्री मंत्र' मोमेन्टम देकर सम्मानित किया गया।

निवेदक : **सुभाष गर्ग,** भट्टी गेट, झज्जर, मो० 9813356991

युवा महोत्सव - एक समीक्षा

राष्ट्रीय महापुरुषों की अनदेखी कर केवल स्वा० विवेकानन्द को उभारना हठधर्मिता

राष्ट्रीय युवा महोत्सव के विज्ञापन में केवल स्वा० विवेकानन्द का चित्र देकर हठधर्मिता का ही परिचय दिया गया। युवाओं के प्रेरणास्रोत केवल स्व० विवेकानन्द नहीं हैं। सुभाषचन्द्र बोस, शिक्षा की अलख जगाने वाले मदनमोहन मालवीय, सरदार भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्या युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत नहीं हैं? राष्ट्रीय गौरव को विश्व में पुन: स्थापित करने वाले राष्ट्र पितामह स्वामी दयनन्द सरस्वती जिनके नाम पर स्थापित महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया, जिनसे प्रेरणा पाकर 90 प्रतिशत लोग स्वतंत्रता आन्दोलन में जेलों में गए, क्या वह युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत नहीं? जिस हरियाणा की धरती के प्रसिद्ध नगर रोहतक में राष्ट्रीय युवा महोत्सव सम्पन्न हुआ उससे 15 कि०मी० की दूरी पर 'गढ़ी सांपला' में जन्मे चौ० छोटूराम क्या युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत नहीं हैं? चौ० छोटूराम की पूजा तो पाकिस्तान में भी होती है लेकिन उनकी जन्मभूमि व कर्मभूमि में उनकी उपेक्षा हुई, यह नितान्त हठधर्मिता है। इससे 'हरियाणा एक-हरियाणावी एक' प्रतीक वाक्य का उद्देश्य फीका पड़ा है। महोत्सव में युवाओं को अनेक बार संस्कृति के नाम पर अश्लील विकृति परोसी गई जिससे वातावरण विषाक्त हुआ और हरियाणा प्रदेश की छवि धूमिल हुई। अश्लील गीतों पर नृत्य द्वारा युवाओं को उत्तेजित करना अपराधों की जड़ है। यह बंद होना चाहिए। युवाओं का ग्राम अंचल भ्रमण व सत्कार अच्छी योजना थी।

महावीर धीर

अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण परिषद् हरियाणा

www.thearyasamaj.org

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : 60-00 रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : १ किलो २५० रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : ३०-०० रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : १४०-०० रूपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

www.thearyasamaj.org

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	७००-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	८०-००
२३.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	सामवेद पदसंहिता	२५-००
३३.	ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१५०-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ____________________

स्थान ____________________

डा० ____________________

जिला ____________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।